Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

बदर

साप्ताहिक क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक- 39

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

6 सफर 1442 हिज्री कमरी 24 तबूक़ 1399 हिजरी शम्सी 24 सितम्बर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

दुआ के लिए अनिवार्य बातों में से पहले ज़रूरी यह है कि नेक कर्म और आस्था पैदा करें। क्योंकि जो आदमी अपनी आस्थायों को ठीक नहीं करता और नेक कर्मों से काम नहीं लेता और केवल दुआ करता है वह मानो ख़ुदा तआला की परीक्षा लेता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इन्सानी पैदाइश का मूल उद्देश्य इबादत है

अब यह साफ़ बात है कि मेरे विरोधी ख़ुदा तआला से विरोध कर रहे हैं। मैं अगर रोशनी की तरफ़ आ रहा हूँ और यह यक़ीनी बात है कि मैं रोशनी की तरफ़ आता हूँ। क्योंकि ख़ुदा तआला के असंख्य निशान मेरे समर्थन में ज़ाहिर हो चुके हैं और हो रहे हैं। बारिश की तरह यह निशान आसमान से उतर रहे हैं। तो फिर ये भी विश्वसनीय बात है कि मेरे विरोधी अन्धेरे की तरफ़ जाते हैं। रोशनी और नूर रूहुल क़ूदस को लाता है और अन्धेरा शैतान का सानिध्य पैदा करता है और इसी तरह वली का विरोध ईमान को छीन लेता है। और बुरे साथी से जा मिलाती है।

सार यह है कि सुधार तब होता है कि व्यावहारिक पूर्णता का पद प्राप्त हो जाएं। अत: सूरत अल-असर में जो اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ फ़रमाया है। इस में اٰمَنُوْا आमनू से इल्मी पूर्णता की तरफ़ इशारा फ़रमाया और عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ से व्यावहारिकता की पूर्णता की तरफ मार्गदर्शन किया। हिक्मत के भी दो ही भाग हैं। एक ज्ञान पूर्ण तथा सर्वोत्तम हो। दूसरा व्यवहार उत्तम और परिपूर्ण हो।

व तवासौ बिल-हक़्क़

अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जो लोग ख़ुसर से सुरक्षित रहते हैं। प्रथम वे इलमी सम्पूर्णता करते हैं और फिर व्यवहार भी गंदे नहीं करते बल्कि इल्मी सम्पूर्णता को व्यावहारिक सम्पूर्णता तक पहुंचाते हैं और फिर यह कि जब उन्हें सम्पूर्ण आध्यात्मिक नूर प्राप्त हो जाता है और उनके परिपूर्ण इल्म का सबूत परिपूर्ण कर्म से मिलता है तो फिर वे कंजूसी नहीं करते, बल्कि وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ पर अनुकरण करते हैं। लोगों को भी उस हक़ की दावत करते हैं जो उन्होंने पाया है। इसके यह अर्थ भी हैं कि कर्मों की रोशनी भी दिखाते हैं। उपदेशक अगर स्वंय कर्म नहीं करता ,तो इसकी बातों का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ सकता। यह भी नियम की बात है कि अगर ख़ुद आदमी कहे और करे नहीं तो इस का बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अगर व्यभिचारी व्यभिचार से मना करे , तो उसकी इस हालत के प्रमाणित हो जाने पर सुनने वालों के नास्तिक हो जाने का भय है, क्योंकि वे ख़्याल करेंगे कि अगर व्यभिचार वास्तव में ख़तरनाक चीज़ होती और ख़ुदा तआला के निकट इस नापाकी पर सज़ा मिलती है और ख़ुदा वास्तव में होता तो फिर यह जो मना करता था, ख़ुद क्यों इस से परहेज़ न करता।

मुझे मालूम है कि एक आदमी एक मौलवी की सोहबत के कारण मुसलमान होने लगा। एक दिन उसने देखा कि वही मौलवी शराब पी रहा था तो इस का दिल सख़्त हो गया और वह रुक गया।

शेष पृष्ठ 9 पर

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

नमाज़ में ध्यान और एकाग्रता बहुत आवश्यक है।

हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: उन लोगों को क्या हुआ है जो नमाज़ में अपनी निगाहें आसमान की तरफ़ उठाते हैं? आप ने इसके बारे में सख़्त इरशाद फ़रमाया :यहां तक फ़रमाया कि उन्हें इस से रुकना होगा। वर्ना उन की बीनाई उच्क ली जाएँगी।

(बुख़ारी, भाग 2 किताबुल अज़ान)

हज़रत आईशा रज़ि से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से नमाज़ में इधर उधर देखने के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमाया: यह शैतान की एक झपट है जो बंदे की नमाज़ पर मारता है और इस में से कुछ ले लेता है।

हज़रत आयशा रज़ि से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक धारीदार काली लोई में नमाज़ पढ़ी। इस पर बेल बूटे थे। आप ने फ़रमाया :इसके नक़्श तथा निगार ने मेरा ध्यान हटा दिया। यह अबो जहम रज़ि के पास ले जाओ और इसकी सादा लोई मुझे ला दो।

(सहीबुख़ारी, भाग 2 किताबुल अज़ान

मौता इमाम मालिक में हज़रत आयशा रज़ि की रिवायत लिखी गई है कि हज़रत अबू जहम रज़ि ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह लोई तोहफा में दी थी जो आप ने बजाय अस्वीकार करने के स्वीकार कर ली।

तुम ख़ुदा तआला से इस तरह का सम्बन्ध बढ़ाओ के तुम पर मौत ऐसे समय में आए जब तुम्हारा बेहतरीन समय हो।

सूरत अल्बकरह आयत 133 की तफ्सरी में हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब खलीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं कि

فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ के दो अर्थ हैं। एक यह कि हर समय इस्लाम पर क़ायम रहो। क्योंकि मौत के बारे में कोई इन्सान नहीं जानता कि वह कब आ जाए । इस लिए तुम्हारा फ़र्ज़ है कि हमेशा रब्बुल आलमीन के आज्ञा-कारी रहो। और ख़ुदा तआला की इताअत में अपना जीवन व्यतीत करो ताकि जब मौत आए तो वह तुम्हें इताअत के अतिरिक्त और किसी हालत में न पाए। दूसरे यह कि अल्लाह तआला से ऐसा सम्बन्ध बढ़ाओ कि वह तुम्हारी तबाही को बर्दाश्त ही न करे और उस वक़्त तुमको मौत दे जबकि तुम सम्पूर्ण मोमिन बन चुके हो और उसकी प्रसन्नता प्राप्त कर चुके हो।

क़ुरआन करीम से ज्ञात होता है कि हर इन्सान पर क़ब्ज़ और बस्त की हालत आती रहती है। कभी तो इन्सान अल्लाह तआला की मुहब्बत में इतना लीन हो जाता है कि सारी दुनिया को भुला देता है और कभी दूसरी चीज़ों की तरफ़ उसे इतना ध्यान होता है कि वह ख़ुदा तआला को भूल जाता है। अत: एक हदीस में आता है कि एक व्यक्ति रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और उसने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह मैं तो मुनाफ़िक़ हो गया आपने फ़रमाया किस तरह ? उस ने कहा। हे रसूलुल्लाह मैं आपके पास आता हूँ तो दूसरी हालत हो जाती है और जब मैं घर जाता हो तो मेरी दूसरी हालत होती है। आपने फ़रमाया यह कोई घबराहट वाली बात नहीं।

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान।

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-19)

इस्लाम का अर्थ ही अमन है।

इस युग में जब कि दुनिया एक हो चुकी है,दुनिया की तरक़्क़ी हमें एक कर रही है , इस तरक़्क़ी का तब ही लाभ है जब आपस में मेल मिलाप किया जाए। इस मिलाप को अपने लाभ के लिए भी प्रयोग करें,बजाय इसके कि एक दूसरे से भय पैदा हो, एक दूसरे के लिए नेक भावनाएँ पैदा होने चाहिऐं।

"इस्लाम " नाम का अर्थ ही अमन है, अगर एक मुसलमान दूसरे को अमन उपलब्ध नहीं करता तो वह मुसलमान ही नहीं है।

इसलिए इस्लाम धर्म के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि वास्तविक मुसलमान वही है जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे लोग सुरक्षित रहें।

यह इस्लाम की बुनियादी शिक्षा है कि इबादत करो, नमाज़ें पढ़ो,लेकिन इसके साथ इन्सानियत की सेवा भी करो, इन्सानी क़द्रें भी स्थापित करो। अतः यह है वह चीज़ जिसे जमाअत अहमदिया दुनिया में स्थापित करने की कोशिश कर रही है और मुझे उम्मीद है कि इस मस्जिद के बनने के बाद यहां अहमदी पहले से भी बढ़कर सेवा के कामों में हिस्सा लेंगे।

जर्मनी के शहर फ़ुलडा में मस्जिद बैयतुल हमीद के उद्घाटन प्रोग्राम में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिन-सरिहलि अज़ीज़ का ईमान बढ़ाने वाला ख़िताब।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

20 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक इतवार)

फ़ुलडा शहर और मस्जिद का परिचय

शहर FULDA जर्मनी के मध्य में स्थित है और यह कैथोलिक चर्च का विशेष क्षेत्र है और यह शहर शुरू से ही ईसाइयत का एक प्रमुख केन्द्र है। इस शहर में जमाअत की स्थापना 1980 ई के दशक में हुई। आरम्भ में दस से पंद्रह ख़ानदान यहां आबाद हुए। जमाअत की संख्या में ग़ैरमामूली वृद्धि हुई। 1993 ई में यहां की जमाअत को 2 हिस्सों में बांट के जमाअत फ़लडा ईस्ट ओरफ़लडावीसट बनाई गई। मस्जिद के लिए 3478 वर्ग मीटर के क्षेत्रफल पर आधारित ज़मीन साल 2013 ई में तीन लाख 50 हज़ार यूरो में ख़रीदी गई। 26 जून 2013 ई को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने अपने दौरा के दौरान इस मस्जिद की बुनियाद रखी। इस मस्जिद में 420 नमाज़ी नमाज़ अदा कर सकते हैं। मस्जिद में 6 मीटर चौड़ा गुंबद और 2 मीनार हैं। नमाज़ के लिए 2 हाल 4 दफ़ातिर, लाइब्रेरी, किचन , स्टोर और मुरब्बी हाऊस भी है। इस मस्जिद को बनाने पर1.6 मिलियन यूरो ख़र्च हुए

मस्जिद के उद्घाटन के हवाले से आयोजन

मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से एक आयोजन FULDA शहर के एक होटल MARITIM के एक हाल में किया गया था। आज की इस आयोजन में शामिल होने वाले मेहमानों की संख्या 330 थी। जिनमें

Mr. Heiko Wingen Feld लार्ड मेयर फ़लडा
Mr. Birgit Kompel साबिक़ मैंबर पार्लीमैंट
Kurt Albrecht चेयरमैन राउंड टेबल रेलजीयनज़ फ़ुलडा
Sara Kautzsch चेयर वूमैन Luther Church
Josef Benkner चेयरमैन SPD कौंसल फ़ुलडा
Alja Epp - Naliwaiko चेयरमैन ग्रीन पार्टी कौंसल फ़लडा
Jurgen Plappert चेयरमैन लिबरल पार्टी कौंसल फ़लडा
शामिल थे।

इसके अतिरिक्त विभिन्न इलाक़ों के मेयर, कौंसल के मैंबर, हुकूमती दफ़्तरों में काम करने वाले लोगों और इसके अतिरिक्त प्रोफ़ैसर्ज़,डाक्टर, टीचर , वुकला और ज़िन्दगी के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल थे।

प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ 5 बजकर 45 मिनट पर मस्जिद बैयतुल हमीद से इस आयोजन में शिरकत के लिए रवाना हुए। पुलिस ने escort किया। 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ होटल Maritim में पधारे। जहां हाल के बाहरी दरवाज़े पर लार्ड मेयर फ़ुलडा ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया। हुज़ूर अनवर के आने से पहले समस्त मेहमान अपनी अपनी सीटों पर बैठ चुके थे। प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय हाफ़िज़ ज़ाकिर मुस्लिम बट साहिब ने की इसके बाद आदरणीय डाक्टर राना आदरणीय अहमद साहिब ने इसका जर्मन अनुवाद प्रस्तुत किया।

इसके बाद सबसे पहले आदरणीय नैशनल अमीर साहिब जर्मनी अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब ने अपना परिचयात्मक सम्बोधन प्रस्तुत किया और मेहमानों को मुबारकबाद कहते हुए फ़ुलडा शहर और जमाअत का परिचय करवाया। अमीर साहिब ने बताया: फुलडा में अहमदियों की संख्या 450 के क़रीब है। 1984 ई में यहां पहले अहमदी आबाद हुए और 1990 ई में एक छोटा सा मकान किराए पर लिया जो बतौर नमाज़ सैंटर प्रयोग किया गया। फ़ुलडा के शहर में शुरू से ही interreligious dialogues आयोजित किए गए और तब्लीग़ी स्टैंडज़ भी लगवाए गए।

शहर फ़ुलडा Hessen प्रान्त के सबसे बड़े शहरों में गिना जाता है और इसका आरम्भ Stone Age में मिलता है। इस शहर की आबादी 7 लाख लोगों पर आधारित है। इस शहर की प्रसिद्ध खासतौर पर उसके पुराने cloister की कारण से है जो के 744 ईसवी में बिना। यह Saint Boniface ने बनवाया जो हक़ीक़त में ईसाइयत को जर्मनी के क्षेत्र में लाने वाला था। इसी तरह यह शहर अपने मेहमान नवाज़ी के कारण से भी मशहूर है। इसके अतिरिक्त शहर में बहुत से शैक्षिक संस्थाएं स्थापित हैं जिस कारण से यह शहर खासतौर पर छात्रों के लिए दिलचस्प है।

अमीर साहिब ने नई मस्जिद के बारे में बताया कि जमाअत 2009 ई से ही एक मस्जिद के स्थान की तलाश में थी। आख़िर 2013 ई में यह स्थान मिला और ख़रीद लिया गया। बनाने का आरम्भ दिसम्बर 2016 ई में हुआ। 26 जून 2013 ई को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने बैयतुल हमीद की बुनियाद रखी। मस्जिद पर कुल 1.6 मिलियन यूरो ख़र्च हुए जिसका अधिक हिस्सा जमाअत फ़ुलडा ने ही अदा किया है। आख़िर पर अमीर साहिब ने सब मेहमानों का इस आयोजन में शामिल होने पर शुक्रिया अदा किया। उसके बाद Sara Kautzsch साहिबा ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। महोदया Lutherchurch फ़ुलडा की चेयरमैन हैं।

महोदया ने अपने निवेदन में सबको मुबारकबाद कहा और सलाम प्रस्तुत किया। साथ इस बात की ख़ुशी का भी इज़्हार किया कि जमाअत की मस्जिद Lutherchurch के क़रीब स्थित है। इस दृष्टि से हमारा फ़र्ज़ बनता है कि हम समस्त इस क्षेत्र में रहने वालों की समस्याओं को हल करने में सहायक बनें। इसलिए हमें मिलकर इस पर काम करना होगा और लोगों को ख़ुदा के निकट लाना होगा क्योंकि हम सब ख़ुदा पर ईमान लाते हैं और उसी की इबादत करते हैं। इसा तरह से अमन स्थापित हो सकेगा।

महोदया ने इसके बाद दूसरी ईसाई जमाअतों की तरफ़ से भी सलाम और मुबारकबाद प्रस्तुत किया और कहा कि उम्मीद है कि इस मस्जिद की स्थापना से

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर नबी का हवारी होता है और मेरे हवारी ज़ुबैर रज़ि हैं

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हवारी और महान बदरी सहाबी हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ी अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

तीन मरहूमीन आदरणीय मेराज अहमद साहिब शहीद(डबगरी गार्डन पेशावर), आदरणीय अदीब अहमद साहिब नासिर मुरब्बी सिल्सिला अहदीपुर नारोवाल और आदरणीय हमीद अहमद शेख़ साहब इस्लामाबाद, पाकिस्तान हाल लंदन,यूके का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 अगस्त 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबा के वर्णन में से आज जिन सहाबी का वर्णन होगा उनका नाम है हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि। हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि के पिता का नाम अव्वाम बिन ख़ुवलिद था और माता का नाम सफ्या बिन्त अब्दुल मुत्तलिब था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फूफी थीं। हज़रत ज़ुबैर रज़ि की वंश परम्परा क़ुसय्य बिन कलाब पर जा कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिल जाती है। आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी हज़रत ख़दीजा रज़ि के भतीजे थे। हज़रत ज़ुबैर रज़ि की हज़रत अबूबकर सिद्दीक की बेटी हज़रत असमाय रज़ि के साथ शादी हुई थी और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि की बेटी हज़रत आयशा रज़ि के साथ शादी हुई थी। यूं हज़रत ज़ुबैर, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमज़ुलफ़ भी थे। इस तरह हज़रत ज़ुबैर को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ये निसबतें प्राप्त थीं। आपकी कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह थी। आपकी माता हज़रत सफ्फिया ने आप की कुनिय्यत अपने भाई ज़ुबैर बिन अब्दुल मुतलिब की कुनिय्यत पर अबू ताहिर रखी थी लेकिन हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने अपनी कुनिय्यत अपने बेटे अब्दुल्लाह के नाम की तुलना से रखी जो बाद में अधिक मशहूर हो गई। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने हज़रत अबू बकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के बाद इस्लाम स्वीकार किया। इस्लाम स्वीकार करने वालों में वह चौथे या पांचवें व्यक्ति थे। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने बारह साल की उम्र में इस्लाम स्वीकार किया। कुछ रवायतों के अनुसार आपने आठ या सोला साल की उम्र में इस्लाम स्वीकार किया। हज़रत ज़ुबैर रज़ि उन दस सौभाग्यशाली सहाबा में से थे जिनको हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी ज़िन्दगी में ही जन्नत की बशारत दे दी थी और उन छः अस्हाबे शूरा में से एक हैं जिन्हें हज़रत उमर रज़ि ने अपनी वफ़ात से पहले अगला ख़लीफ़ा चुनने के लिए चयनित किया था।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मारफितस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 307 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

(अल्असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 457 ज़िक्र अस्मा अल्ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

(सैरुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 67 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दार उल-इशाअत कराची)

जब हज़रत ज़ुबैर रज़ि के पिता अव्वाम का देहान्त हुआ तो नौफ़ल बिन ख़ूवलीद अपने भतीजे ज़ुबैर का लालन पालन करते थे और हज़रत सफिया जो हज़रत ज़ुबैर रज़ि की माता थीं उन्हें मारती थीं या डाँटती थीं। उस समय हज़रत ज़ुबैर छोटी उम्र के थे तो नौफ़ल ने, उनके चाचा ने हज़रत सफिया रज़ि को कहा कि क्या इस तरह बच्चों को मारा जाता है, सख़्ती की जाती है? तुम तो ऐसे मारती हो जैसे उस से नाराज़ हो। इस पर हज़रत सफिया रज़ि ने ये अशआर पढ़े कि

مَنْ قَالَ إِنِّي أُبْغِضُهُ فَقَدْ كَذَبْ
وَ إِنَّمَا أَضْرِبُهُ لِكَيْ يَلَبْ
وَ يَهْزِمَ الْجَيْشَ وَ يَأْتِيَ بِالسَّلَبْ
وَ لَا يَكُنْ لِمَالِهِ خَبًّا مُخَبْ
يَأْكُلُ فِي الْبَيْتِ مِنْ تَمْرٍ وَّ حَبْ

कि जो इस बात का मानने वाला है कि मैं उस से नाराज़ हूँ तो वह झूठा है। मैं उस पर इसलिए सख़्ती करती हूँ उसे मारती हूँ ताकि यह बहादुर बने और लश्करों को शिकस्त दे और मक़्तूल का सामान लेकर लौटे और अपने माल के लिए छुप कर न बैठे कि घर में बैठा खजूरें और अनाज खाता फिरे।

(अल्असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 458 ज़िक्र अस्मा अल्ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

बहरहाल यह सोच थी उनकी और इसके अनुसार उनका तर्बीयत का तरीक़ा था कि बहादुर बनाने का यह तरीक़ा है। ज़रूरी नहीं कि हम कहें कि यह बड़ा अच्छा तरीक़ा है और प्राय तो आजकल यही देखा जाता है कि इस से भरोसा में कमी आती है। बहरहाल उस समय जो सख़्ती थी अल्लाह तआला ने उन्हें इस मार के बुरे प्रभावों से बचाया। माँ की ममता मशहूर है। प्यार भी करती होंगी। सिर्फ मारती ही नहीं होंगी। और बाद की घटनाएं प्रकट करते हैं कि वास्तव में उनमें बहादुरी और साहस पैदा हुआ। किस कारण से हुआ अल्लाह बेहतर जानता है लेकिन बहरहाल कोई नकारात्मक प्रभाव बचपन की इस मार का उन पर नहीं हुआ। यहां अगर आजकल किसी ने आज़माने की कोशिश की तो यहां तो सोशल सर्विस वाले फ़ौरन आ जाऐंगे और बच्चों को ले जाऐंगे। इसलिए माताएं कहीं यह तरीक़ा आज़माने की कोशिश न करें।

जब हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने इस्लाम स्वीकार कर लिया तो आप रज़ि के चाचा आपको एक चटाई में लपेट कर धुआँ देते थे ताकि वह इस्लाम छोड़कर कुफ्र में लौट जाएं परन्तु आप यही कहते थे कि अब मैं कुफ्र में नहीं लौटूँगा।

(अल्असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 457 ज़िक्र अस्मा अल्ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने उनके बारे में इस घटना को इस तरह वर्णन फ़रमाया है कि "ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि एक बहुत बड़े बहादुर नौजवान थे। इस्लाम की विजयों के ज़माना में वह एक ज़बरदस्त जरनैल साबित हुए। उनका चाचा भी उनको ख़ूब तकलीफ़ें देता था। चटाई में लपेट देता था और नीचे से धुआँ देता था ताकि उनका सांस रुक जाए और फिर कहता था कि क्या अब भी इस्लाम से वापस आओगे या नहीं? परन्तु वह इन कष्टों को सहन करते और जवाब में यही कहते कि मैं सच्चाई को पहचान कर इस से इन्कार नहीं कर सकता।'

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 196-197)

हिशाम बिन उरवा अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत ज़ुबैर जब बच्चे थे तो मक्का में एक व्यक्ति से लड़ाई हो गई। इस व्यक्ति ने कोई सख़्ती की होगी। यह छोटे थे वह बड़ा मर्द था। बहरहाल इस लड़ाई में उन्होंने उन व्यक्ति का हाथ तोड़ दिया और सख़्त चोट पहुंचाई। बहरहाल उस व्यक्ति को सवारी पर लाद कर हज़रत सफिया के पास लाया गया कि दिखाएंगे। इस से कहें कि आपके बेटे ने इस का यह हाल किया है। हज़रत सफिया ने पूछा कि इस को क्या हुआ है? लोगों ने कहा कि हज़रत ज़ुबैर ने इस से लड़ाई की है। यह नहीं बताया कि क़सूर किस का है। बहरहाल लड़ाई हुई तो हज़रत सफिया ने हज़रत ज़ुबैर की इस दिलेरी पर शेअर पढ़ते हुए कहा कि

كَيْفَ رَأَيْتَ زَبْرًا
أَأَقِطًا حَسِيْتَهُ أَمْ تَمْرًا
أَمْ مُشْمَعِلًّا صَقْرًا

कि तुमने ज़ुबैर को कैसा पाया? क्या उसे पनीर और खजूर की तरह समझा हुआ था कि आसानी से उसे खा जाओगे। जो चाहोगे इस से कर लोगे। वह तो तेज़ झपटने वाले उक़ाब की तरह है। तुमने उस को तेज़ झपटने वाले उक़ाब की तरह पाया होगा।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 74-75 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि हब्शा की तरफ़ दोनों हिजरतों में शरीक हुए और जब आप हिज्रत करके मदीना आए तो हज़रत मुनज़र बिन मुहम्मद रज़ि के ठहरे।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 75 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत अस्मा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा जो हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि की पत्नी थीं उनसे रिवायत है कि जब मैं मक्का से हिज्रत करके रवाना हुई तो मैं गर्भवती थी। वह वर्णन करती हैं कि मैं ने क़बा में पड़ाव किया। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि वहां पैदा हुआ। फिर मैं उसे लेकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुई। आप ने उसे अपनी गोद में रखा। फिर आप ने एक खजूर मँगवाई, उसे चबाया। फिर उस बच्चे के मुँह में पहले थूक डाला। पहली चीज़ जो उसके पेट में गई वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुबारक थूक था। फिर आप ने खजूर चबा कर उसके मुँह में डाली और इसके लिए बरकत की दुआ की और वह पहला बच्चा था जो इस्लाम में पैदा हुआ।

(सही अल-बुख़ारी किताब मनाक़िब अल-अन्सार बाब हिजरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम व असहाबेही इलल्मदीनते हदीस नम्बर 3909)

सही मुस्लिम की रिवायत से पता चलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अस्मा के बेटे का नाम अब्दुल्लाह रखा था। जब वह सात या आठ साल के हुए तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत के लिए आए और उन्हें इस बात का उनके पिता हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने आदेश दिया था कि जाओ बैअत करो। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपनी तरफ आते हुए देखा तो आप ने तबस्सुम फ़रमाया। आप मुस्कुराए और फिर उस की बैअत ली।

(सही मुस्लिम किताबुल आदाब बाब इस्तिहबाब तहनीक अल-मौलूद इन्दल विलादत .... हदीस नम्बर 2146)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मक्का में मुहाजिरीन ने भाई भाई बनाया तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि को भाई भाई बनाया थी। मदीना हिज्रत के बाद जब मुहाजिरीन की अन्सार को भाई भाई बनाया तो हज़रत सलमा बिन सुलैमा रज़ि इनके दीनी भाई ठहरे।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मारफितस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 307 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने अपने बेटों के नाम शहीदों के नाम पर रखे थे ताकि शायद अल्लाह उन्हें शहादत प्रदान करे। अब्दुल्लाह का नाम अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि के नाम पर। मुनिज़र का नाम मुन्ज़िर बिन अमरो रज़ि के नाम पर। उर्वा का नाम उरवा बिन मसूद रज़ि के नाम पर। हमज़ा का नाम हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब रज़ि के नाम पर। जाफ़िर का नाम जाफ़िर बिन अबू तालिब रज़ि के नाम पर। मुसअब का नाम मुसअब बिन उमैर रज़ि के नाम पर। उबैदा का नाम उबैदा बिन हारिस के नाम पर। ख़ालिद का नाम ख़ालिद बिन सईद के नाम पर और अमरो का नाम अमरो बिन सईद के नाम पर रखा। हज़रत अमरो बिन सईद जंग यरमौक में शहीद हुए थे।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 74 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

और यह पता नहीं किस हद तक सही है। क्योंकि हज़रत अब्दुल्लाह का जो जन्म का वक़्त है तो अगर वह पहले बच्चे थे तो किस सन में पैदा हुए? अल्लाह बेहतर जानता है। लेकिन इस वक़्त किसी की शहादत हो भी चुकी थी कि नहीं लेकिन बहरहाल इन बुज़ुर्ग लोगों के नाम पर उन्होंने ये नाम रखे।

उरवा बिन ज़ुबैर वर्णन करते हैं कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि इतने लम्बे क़द थे कि जब आप सवार होते तो आप के पांव ज़मीन पर लगते।

(अल्असाबाा फ़ी तमीज़िस्सहाबाा भाग 2 पृष्ठ 458 ज़िक्र अस्मा अल्ज़ुबैर ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि कहते हैं कि मैंने अपने पिता अर्थात हज़रत ज़ुबैर रज़ि से पूछा कि जिस तरह हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि और अन्य लोगों को मैं हदीस वर्णन करता हुआ सुनता हूँ। बहुत सारी रिवायतें वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हवाले से वर्णन करते हैं। आपको नहीं सुनता उसका क्या कारण है? उन्होंने फ़रमाया कि जब से मैं ने इस्लाम स्वीकार किया है, नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कभी अलग नहीं हुआ लेकिन मैं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जिस व्यक्ति ने जान-बूझ कर मेरी तरफ़ झूटी बात सम्बन्धित की उसने अपना ठिकाना जहन्नुम में बना लिया।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 1पृष्ठ 451मस्नद ज़ुबैर बिन अल्अवाम रज़ि हदीस 1413 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

इस का यह अर्थ नहीं कि बाक़ी झूठ सम्बन्धित करते थे बल्कि यह कि मैं अपने लिए यही बेहतर समझता हूँ कि सावधानी करूँ। हालाँकि वहां तो जान कर सम्बन्धित किया लेकिन इतने सावधान थे कहते थे कहीं ग़लती से भी कोई ऐसी बात संबधित न कर दूं और फिर कहीं सज़ा पाने वालों में से न हो जाऊं। यह उनकी सावधानी थी।

हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़ि से रिवायत है कि हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने अपनी तलवार को अल्लाह की राह में नयाम से निकाला था। एक बार हज़रत ज़ुबैर रज़ि मतबिख़, मक्का में एक स्थान का नाम है इसकी घाटी में आराम कर रहे थे कि अचानक आवाज़ आई कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल कर दिया गया है। वह फ़ौरन अपनी तलवार को नयाम से निकालते हुए अपने घर से निकले उस जगह से जहां वह आराम कर रहे थे वहां से निकले। रास्ते में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देख लिया और पूछा ज़ुबैर रज़ि रुक जाओ, रुक जाओ क्या बात है? उन्होंने निवेदन किया कि मैंने सुना था, एक आवाज़ आई थी मुझे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शहीद कर दिया गया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा अगर मुझे शहीद कर दिया तो फिर तुम क्या कर सकते थे ? कहने लगे अल्लाह की क़सम ! मैं ने इरादा किया कि सारे मक्का वालों को क़तल कर दूं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपके लिए उस वक़्त विशेष दुआ फ़रमाई। एक रिवायत में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपकी तलवार के लिए भी दुआ फ़रमाई।

हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़ि कहते हैं कि मैं उम्मीद करता हूँ कि उनके हक़ में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ को अल्लाह नष्ट नहीं करेगा।

(किताब फ़ज़ाइल सहाब ले इमाम अहमद बिन हनबल भाग 2 पृष्ठ 733 फ़ज़ाइल अल्ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल अल्म अत्तबाअत वन्नशर अस्सऊदया 1983 ई)

(अल इस्तेयाब फ़ी मअरिफ़तिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 512 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल जैल, बेरूत 1992 ई)

(मुअजमुल बुलदान भाग 5 पृष्ठ 171 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि जंग बदर, उहद और अन्य समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल रहे। जंग उहद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ साबित-क़दम रहे। आप से मौत पर बैअत की। फ़तह मक्का के अवसर पर मुहाजरीन के तीन झंडों में से एक झंडा हज़रत ज़ुबैर रज़ि के पास था।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 77 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

बदर के दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ दो घोड़े थे। जिनमें से एक पर हज़रत ज़ुबैर रज़ि सवार थे।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 76 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत अरवा से रिवायत है कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि के शरीर पर तलवार के तीन बड़े गहरे ज़ख़म थे जिनमें मैं अपनी उंगलियां डाला करता था अर्थात गहरे ज़ख़्म थे। दो ज़ख़म जंग बदर के अवसर पर आए थे और एक ज़ख़म जंग यरमौक के अवसर पर लगा था।

(अल्असाबाा फ़ी तमीज़िस्सहाबाा भाग 2 पृष्ठ 459 ज़िक्र अस्मा अल्ज़ुबैर ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

मूसा बिन मुहम्मद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि ज़र्द पगड़ी के कारण से पहचान लिए जाते थे। लाल पगड़ी बाँधा करते थे। जंग

बदर में हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने लाल पगड़ी बाँधी हुई था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखकर फ़रमाया कि फ़रिश्ते ज़ुबैर रज़ि के जैसे उतरे हैं।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 76 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

अर्थात जो अल्लाह तआला ने मदद के लिए भेजे हैं वे भी इसी पगड़ी में जंग लड़ रहे हैं। हिशाम बिन अरवा अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि कहते थे कि जंग बदर के दिन उबैदा बिन सईद से मेरी मुठभेड़ हुई और उसने हथियारों को पूरी तरह ऊपर पहना हुआ था। उसकी सिर्फ आँखें ही नज़र आती थीं और उसकी कुनिय्यत अबू ज़त अलकृश थी। वह कहने लगा मैं अबू ज़त अलकृश हूँ। यह सुनते ही मैंने इस पर बरछी से हमला कर दिया और उसकी आँख में ज़ख़्म लगाया तो वह वहीं मर गया। इस ज़ोर से मारी थी कि हिशाम कहते थे मुझे बताया गया कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि कहते थे कि मैंने अपना पांव उस पर रखकर पूरा ज़ोर लगाया और बड़ी मुश्किल से मैंने वह बरछी खींच कर निकाली तो उसके दोनों किनारे मुड़ गए थे। उर्वा कहते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह बिरछी हज़रत ज़ुबैर रज़ि से मांग ली। उन्होंने आप को पेश कर दी। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हुए तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने उसे वापस ले लिया। फिर उसके बाद हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने वह बिरछी मांगी। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने उन्हें दे दी। जब हज़रत अबूबकर फ़ौत हुए तो हज़रत उमर रज़ि ने आप से वह बरछी तलब की और आप ने उन्हें दे दी। जब हज़रत उमर रज़ि फ़ौत हुए तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने वापस ले ली। फिर उसके बाद हज़रत उसमान रज़ि ने उनसे वह बरछी मांग ली और हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने उन्हें दे दी। जब हज़रत उसमान शहीद हुए तो वह हज़रत अली रज़ि की औलाद को मिल गई। आख़िर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि ने उनसे ले ली और वह उनके पास रही यहां तक कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि शहीद कर दिए गए।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब 12 हदीस 3998)

हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि वर्णन करते हैं कि जंग उहद के दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे लिए अपने माता पिता को जमा फ़रमाया अर्थात मुझ से यूं फ़रमाया कि मेरे माँ बाप तुम पर क़ुर्बान हों।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 1 पृष्ठ 450 मस्नद ज़ुबैर बिन अल-अवाम हदीस 1408 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि से रिवायत है कि जंग उहद के दिन एक औरत सामने से बड़ी तेज़ी के साथ आती हुई दिखाई दी। क़रीब था कि वह शुहदा की लाशें देख लेती। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस चीज़ को अच्छा नहीं समझा कि औरत उन्हें देख सके। बहुत बुरी हालत में मुसला किया गया था इसलिए फ़रमाया कि उस औरत को रोको, उस औरत को रोको। हज़रत ज़ुबैर रज़ि फ़रमाते हैं कि मुझे अंदाज़ा हो गया कि यह मेरी माता हज़रत सफिया हैं। अत: मैं उनकी तरफ़ दौड़ता हुआ गया और उनके शहीदों की लाशों तक पहुंचने से पहले ही मैं उन तक पहुंच गया। उन्होंने मुझे देखकर मेरे सीने पर हाथ मार कर मुझे पीछे धकेल दिया। वह एक मज़बूत औरत थीं और कहने लगीं कि परे हटो मैं तुमसे नहीं बोलती। अर्थात कि तुमसे मैंने कोई बात नहीं करनी। अत: तुम परे हट जाओ और न मैंने तुम्हारी बात सुननी है। मैंने निवेदन किया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको क़सम दिलाई है कि इन लाशों को मत देखें। यह सुनते ही वह रुक गईं। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हवाला दिया गया तो वह रुक गईं और अपने पास मौजूद दो कपड़े निकाल कर फ़रमाया:ये दो कपड़े हैं जो में अपने भाई हमज़ा के लिए लाई हूँ क्योंकि मुझे उनकी शहादत की ख़बर मिल चुकी है। तुम उन्हें इन कपड़ों में कफ़न दे देना। एक रिवायत में है कि हज़रत सफिया रज़ि ने कहा मुझे यह पता है कि मेरे भाई का मुसला हुआ है और यह ख़ुदा की राह में ही हुआ है और ख़ुदा की राह में जो भी सुलूक हज़रत हमज़ा रज़ि के साथ हुआ है इस पर हम क्यों न राज़ी हों। मैं इंशा अल्लाह सब्र करूँगी और इस का बदला ख़ुदा से चाहूंगी। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने माँ का यह जवाब सुना तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और सारी बातें निवेदन कीं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सफिया को भाई की लाश पर जाने दो। हज़रत सफिया आगे बढ़ीं, भाई की लाश को देखा इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैह राजेऊन पढ़ा और उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ की। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको दफ़्न करने का हुक्म दिया। फिर आगे रावी कहते हैं कि जब हम हज़रत हमज़ा रज़ि को इन दो कपड़ों में कफ़न देने लगे तो देखा कि उनके पहलू में एक अन्सारी शहीद हुए पड़े हैं। उनके साथ भी वही सुलूक किया गया था जो हज़रत हमज़ा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के साथ किया गया था। हमें इस बात पर शर्म महसूस हुई कि हज़रत हमज़ा को दो कपड़ों में कफ़न दे दें और इस अन्सारी को एक कपड़ा भी न मिले। इसलिए हम ने यह तय किया कि एक कपड़े में हज़रत हमज़ा रज़ि को और दूसरे में इस अन्सारी सहाबी को कफ़न दे देंगे। अंदाज़ा करने पर हमें मालूम हुआ कि इन दोनों हज़रात में से एक अधिक लंबे क़द के थे हमने क़ुरआ अंदाज़ी की और जिनके नाम पर जो कपड़ा निकल आया उसे उसी कपड़े में दफ़्ना दिया। तब भी वह पूरा नहीं आया था तो घास डालनी पड़ी थी।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 1पृष्ठ 452 मस्नद ज़ुबैर बिन अल-अवाम रिवायत1418 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

(अस्सीरतुन्नबिवय्या ले इब्न हिशाम भाग 2 पृष्ठ 97 सफिया व हज़नहा अला हमज़ा शर्क मकतबा व मतबा मुस्तफ़ा अलबाबी बे मिसर 1955 ई) (अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 10 प्राकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत जाबिर बिन अबिदुल्लाह रज़ि से रिवायत है कि जंग ख़ंदक़ के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई है जो मेरे पास बनू क़ुरैज़ा की ख़बर लाए तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने निवेदन किया कि मैं हाज़िर हूँ। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर फ़रमाया कोई है जो मेरे पास बनू क़ुरैज़ा की ख़बर लाए। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने फिर जवाब दिया मैं हाज़िर हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीसरी बार फ़रमाया कि कोई है जो मेरे पास बनू क़ुरैज़ा की ख़बर लाए। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने निवेदन किया कि मैं हाज़िर हूँ। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर नबी का हवारी होता है और मेरे हवारी ज़ुबैर हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि ने एक व्यक्ति को कहते सुना जो कहता था कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हवारी का बेटा हूँ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि ने कहा कि अगर तुम हज़रत ज़ुबैर रज़ि की औलाद में से हो तो ठीक है वर्ना नहीं। पूछा गया कि क्या हज़रत ज़ुबैर रज़ि के अतिरिक्त भी और कोई था जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हवारी कहा जाता था तो हज़रत इब्ने उम्र ने कहा कि मेरे इल्म में कोई और नहीं है।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 78 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि रिवायत करते हैं कि जंगे एहज़ाब के दिन मुझे और उम्र बिन अबी सलमा को औरतों में निर्धारित किया गया। मैंने जो निगाह की तो क्या देखता हूँ कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि अपने घोड़े पर सवार हैं। मैंने बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ दो बार या तीन बार जाते हुए उन्हें देखा। जब मैं लौट कर आया तो मैंने कहा हे मेरे पिता मैं ने आपको इधर उधर जाते हुए देखा था। उन्होंने कहा बेटा क्या तुमने वास्तव में मुझे देखा था? मैंने कहा हाँ । तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि बनू क़ुरैज़ा के पास कौन जाएगा और उनकी ख़बर लेकर मेरे पास आएगा। यह सुनकर मैं चला गया। जब मैं लौटा, जब वापस आ कर यह रिपोर्ट दी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे लिए अपने माँ बाप दोनों का इकट्ठा नाम लिया अर्थात फ़रमाया मेरे माँ बाप तुझ पर क़ुर्बान हों।

(सही अलबख़ारी किताब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाब मनाक़िब अल्ज़ुबैर बिन अल-अवाम हदीस 3720)

जंग ख़ैबर में यहूद का मशहूर सरदार मरहब हज़रत मुहम्मद बिन मुसलमा के हाथों मारा गया तो उसका भाई यासिर मैदान में आया। उसने मन युबारिज़?का नारा बुलंद किया कि कौन है जो मेरा मुक़ाबला करेगा? हज़रत ज़ुबैर रज़ि उसके मुक़ाबला के लिए आगे बढ़े। हज़रत सफिया रज़ि ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह! मालूम होता है कि आज मेरे बेटे को शहादत नसीब होगी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं बल्कि तेरा बेटा उसको मारेगा। हज़रत ज़ुबैर रज़ि यासर के मुक़ाबले के लिए निकले और वह हज़रत ज़ुबैर रज़ि के हाथों मारा गया।

(सीरतुन्नबवी ले इब्न हिशाम भाग 2 पृष्ठ 334 मक़तल यासर अख़ी मर्हब शर्क मकतब व मतबा मुस्तफ़ा बे मिसर 1955 ई)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि उन तीन लोगों में भी शामिल थे जिन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस औरत का पता करने भेजा था जो कुफ़्फ़ार के लिए हज़रत हअतिब बिन अबी बलता का ख़त लेकर जा रही थी। यद्यपि इस का वर्णन पहले हो चुका है लेकिन इस हवाले से यहां भी थोड़ा सा ज़िक्र कर देता हूँ।

हज़रत अली रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

मुझे ,हज़रत ज़ुबैर रज़ि और हज़रत मकदाद रज़ि को एक जगह भेजते हुए फ़रमाया कि जब तुम रूज़ा ख़ाख़ में पहुँचोगे तो वहां तुम्हें एक औरत मिलेगी जिसके पास एक ख़त होगा। तुम उस से वह ख़त लेकर वापस ले आ जाना। अत: हम लोग रवाना हो गए यहां तक कि हम रूज़ा ख़ाख़ पहुंचे। यह मक्का और मदीना के मध्य एक जगह है इस का नाम है। वहां हमें हक़ीकत में एक औरत मिली। हमने इस से कहा कि तेरे पास जो ख़त है वह निकाल दे। उसने कहा मेरे पास तो कोई ख़त नहीं। हमने उसे कहा कि या तो ख़ुद ही ख़त निकाल दो या फिर हम सख़्ती करेंगे बल्कि तुम्हें नंगा करेंगे। जिस हद तक भी हमें जाना पड़ा जाऐंगे। मजबूर हो कर उसने अपने बालों की चोटी में से एक ख़त निकाल कर हमारे हवाले कर दिया। हम वह ख़त लेकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। इस ख़त को जो खोल कर देखा गया तो पता चला कि वह हज़रत हातिब बिन अबी बलता रज़ि की तरफ़ से कुछ मुशरिकीने मक्का के नाम था जिसमें नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक फ़ैसले की ख़बर दी गई थी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा कि हातिब यह क्या है? यह तुमने क्या-किया है? उन्होंने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह मेरे मामले में जल्दी न कीजीएगा। मैं क़ुरैश से सम्बन्ध नहीं रखता। अलबत्ता उनमें शामिल हो गया हूँ। मैंने सोचा कि उन पर एक उपकार कर दूं। मैं ने यह काम जो है यह काफ़िर हो कर या मुर्तद हो कर या इस्लाम के बाद कुफ्र को पसन्द करते हुए नहीं किया। सिर्फ उन लोगों पर एक एहसान करना चाहता था जिसके कारण से मैंने किया है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी यह बात सुनकर फ़रमाया कि तुमने सच कहा। हज़रत हातिब बिन अबी बलता के बारे में कहा कि तुमसे उसने सच वर्णन किया है। हज़रत उमर रज़ि उस वक़्त बड़े ग़ुस्से में थे और ग़ुस्से में मग़लूब हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि मुझे आज्ञा दें कि इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह जंग बदर में शरीक हो चुके हैं और तुम्हें यह क्या ख़बर कि अल्लाह ने आसमान से बदर वालों को झांक कर देखा और फ़रमाया कि तुम जो कुछ करते रहो मैं तुम्हें माफ़ कर चुका हूँ।

(मस्नद अहमद बिन हनबल भाग 1 पृष्ठ 251मस्नद अली बिन अबी तालिब हदीस 600 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

(फ़र्हंग सीरत अज़ सय्यद फ़ज़लुर्रहमान पृष्ठ 136)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का फ़तह किया तो हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि फ़ौज के बाएं तरफ़ थे और हज़रत मिक़दाद बिन असवद उसके दाएं हिस्से पर निर्धारित थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में दाख़िल हुए और लोग सन्तुष्ट हो गए तो दोनों हज़रात यानी हज़रत ज़ुबैर रज़ि और हज़रत मिकदाद रज़ि अपने घोड़ों पर आए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हो कर उनके चेहरों से अपनी चादर के साथ ग़ुबार पोंछने लगे और फ़रमाया कि मैंने घोड़े के लिए दो हिस्से और सवार के लिए एक हिस्सा निर्धारित किया है। जो इन दोनों को कम दे अल्लाह उसे कम दे।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 77 ज़ुबैर बिन अल्अवाम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि हज़रत ज़ुबैर रज़ि की एक घटना वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुबल नामी बुत के ऊपर अपनी छड़ी मारी और वह अपने स्थान से गिर कर टूट गया तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने अबू सुफ़ियान की तरफ़ मुस्कुराते हुए देखा और कहा अबू सुफ़ियान याद है उहद के दिन जब मुस्लमान ज़ख़्मों से चूर एक तरफ़ खड़े हुए थे। तुमने अपने अहंकार में यह ऐलान किया था कि ऊलो हुबुल ऊलो हुबुल। हुबल की शान बुलंद हो। हुबल की शान बुलंद हो और यह कि हुबल ने ही तुमको उहद के दिन मुस्लमानों पर फ़तह दी थी। आज देखते हो सामने हुबल के टुकड़े पड़े हैं। अबूसुफ़ियान ने कहा ज़ुबैर रज़ि यह बातें अब जाने दो। आज हमको अच्छी तरह नज़र आ रहा है कि अगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुदा के सिवा कोई और ख़ुदा भी होता तो आज जो कुछ हम देख रहे हैं इस तरह कभी न होता। अत: यही ख़ुदा है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़ुदा है।

(उद्धिरत दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 346-347)

जंग हुनैन के दिन क़बीला हवाज़न की आशा के विपरीत तीर-अंदाज़ी से और इस कारण से भी कि आज इस्लामी लश्कर में दो हज़ार नए मुस्लिम भी शामिल थे। ऐसा समय आया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले मैदान में रह गए। हज़रत अब्बास रज़ि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़च्चर की लगाम थामे थे। काफ़िर सरदार मालिक बन औफ़ एक घाटी पर घुड़सवारों के साथ खड़ा था। उसने देखा कुछ घुड़सवार ज़ाहिर हुए। मालिक बन औफ़ ने पूछा यह क्या नज़र आ रहा है? इसके साथियों ने कहा कि कुछ लोग हैं अपने नेज़े घोड़ों के कानों के मध्य रखे हुए हैं। उसने कहा ये बनू सुलेम हैं उनसे तुम्हें कोई ख़तरा नहीं है। अत: वे आए और वादी की तरफ़ निकल गए। फिर देखा एक और दस्ता सवारों का प्रकट हुआ। मालिक ने पूछा क्या देखते हो। उसने कहा कुछ लोग हैं भाले हाथ में हैं। उसने कहा ये ओस और ख़ज़रज हैं। उसने कहा उनसे भी कोई ख़तरा नहीं। वे भी जब घाटी के क़रीब पहुंचे तो बनू सुलेम की तरह वादी की तरफ़ चल पड़े। फिर एक सवार नज़र आया। मालिक ने अपने साथियों से पूछा यह क्या देखते हो? उन्होंने कहा एक घुड़सवार है। लंबा क़द कंधे पर नेज़ा है। सिर पर लाल पटका बाँधे हुए है। मालिक ने कहा यह ज़ुबैर बिन अवाम है। लात की क़सम! इसकी तुमसे मुढभेड़ होगी। अब क़दम मज़बूत कर लो। जब हज़रत ज़ुबैर रज़ि घाटी पर पहुंचे। सवारों ने उन्हें देखा तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि चट्टान की तरह उनके सामने डट गए और नेज़े के ऐसे वार किए कि घाटी इन काफ़िर सरदारों से ख़ाली करा ली।

(उद्धिरत रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 52-53)

(सीरतुन्नबवी ले इब्न हिशाम भाग 2 पृष्ठ 456 वसीया मालिक बन औफ़ ले कौमिही लिक़ा ज़ुबैर लहुम प्रकाशन मुस्तफ़ा बे मिसर 1955 ई)

उर्वा अपने पिता से वर्णन करते हैं कि जंग यरमौक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि से कहा क्या आप हमला नहीं करेंगे कि हम भी आपके साथ हमला करें? हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने कहा अगर मैंने हमला किया तो तुम पीछे रह जाओगे। उन्होंने कहा हम पीछे नहीं रहेंगे। अत: हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने कुफ़्फ़ार पर इस ज़ोर से हमला किया कि उनकी सफ़ें चीरते हुए निकल गए और देखा कि उनके साथ कोई एक भी न था। पीछे मुड़ के जब देखा तो कोई एक भी उनके साथ नहीं था। फिर वे लौटे तो कुफ़्फ़ार ने उनके घोड़े की लगाम पकड़ ली और उनके कंधे पर दो ज़ख़्म लगाए जिनमें वह बड़ा ज़ख़्म भी था जो जंग बदर में उनको लगा था। उर्वा कहते थे कि मैं अपनी उंगलियां इन ज़ख़्मों में डाल कर खेला करता था और मैं उस वक़्त छोटा था। उर्वा कहते हैं कि इन दिनों यरमौक की लड़ाई में हज़रत ज़ुबैर रज़ि के साथ अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि भी थे और उस वक़्त वह दस वर्ष के थे। हज़रत ज़ुबैर रज़ि उन्हें घोड़े पर सवार करके ले गए थे और एक व्यक्ति को उनकी हिफ़ाज़त के लिए निर्धारित कर रखा था।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब क़तल अबू जहल हदीस 3975)

सीरिया विजय के बाद हज़रत अमरो बिन आस रज़ि की सरकर्दगी में मिस्र पर हमला हुआ। मिस्र के फ़ातिह हज़रत अमरो बिन आस ने सिकंदरिया पर हमला करने का इरादा किया था तो सिकंदरिया के दिक्षण में दरिया नील के किनारे ख़ेमे लगा लिए थे इसलिए उसको फ़ुसतास कहते हैं। यही स्थान बाद में शहर बन गया और इसी शहर का नाया हिस्सा आज क़ाहिरा कहलाता है। जब मुस्लमानों ने इस फ़ुसतास का घेराव कर लिया। उन्होंने क़िले की मज़बूती और फ़ौज की कमी को देखा तो हज़रत अमरो बिन आस रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि से सहायता रवाना करने के लिए

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

निवेदन किया। हज़रत उमर रज़ि ने दस हज़ार फ़ौज और चार अफ़्सर भिजवाए। फ़रमाया उनमें से हर एक अफ़्सर एक हज़ार के बराबर है। उनमें से एक हज़रत ज़ुबैर रज़ि थे। ये पहुंचे तो हज़रत अमरो बिन आस रज़ि ने घेराव का प्रबन्ध उनके सपुर्द किए। उन्होंने घोड़े पर सवार हो कर क़िले के गर्द चक्कर लगाया। फ़ौज को तर्तीब दी। सवारों और प्यादों को विभिन्न जगहों पर तैनात किया। मंजनीकों से क़िले पर पत्थर फेंकने शुरू किए। सात माह तक घेराव जारी रहा। फ़तह और शिकस्त का कुछ फ़ैसला न हुआ। हज़रत ज़ुबैर रज़ि एक दिन कहने लगे कि आज में मुस्लमानों पर फ़िदा होता हूँ। यह कह कर तलवार सौंत ली और सीढ़ी लगा कर फ़सील पर चढ़ गए। कुछ और सहाबा ने उनका साथ दिया। किला की दीवार पर पहुंच कर सबने एक साथ तकबीर के नारे बुलंद किए और साथ ही सारी फ़ौज ने इतने ज़ोर से नारा बुलंद किया कि क़िले की ज़मीन दहल गई। ईसाइयों ने समझा कि मुस्लमान क़िले के अंदर घुस गए हैं। वे बदहवास हो कर भाग खड़े हुए। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने किला की दीवार से उतर कर किला का दरवाज़ा खोल दिया और सारी फ़ौज अंदर घुस गई।

(उद्धरित रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 54-55)

(मुअजमुल बुलदान इन पृष्ठ 259 प्रकाशन अल-फ़ैसल उर्दू बाज़ार लाहौर 2013 ई)

हज़रत उमर रज़ि की वफ़ात के समय ख़िलाफ़त कमेटी के मेम्बरों की नामज़दगी और वफ़ात के बाद ख़िलाफ़त के चुनाव की घटना बुख़ारी में जो दर्ज है वह यूं है कि जब हज़रत उमर रज़ि के देहान्त का समय क़रीब आया तो लोगों ने कहा कि हे अमीरुल मोमेनीन वसीयत कर दें, किसी को ख़लीफ़ा निर्धारित कर जाएं। उन्होंने फ़रमाया कि मैं इस ख़िलाफ़त का हक़दार उन कुछ लोगों से बढ़कर और किसी को नहीं पाता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसी हालत में फ़ौत हुए कि आप उनसे राज़ी थे। उन्होंने हज़रत अली रज़ि, हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत ज़ुबैर रज़ि, हज़रत तलहा रज़ि, हज़रत सअद रज़ि और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि का नाम लिया और कहा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि तुम्हारे साथ शरीक रहेगा और ख़िलाफ़त में उसका हक़ कोई नहीं होगा। और फिर फ़रमाया कि अगर ख़िलाफ़त सअद रज़ि को मिल गई तो फिर वही ख़लीफ़ा हो वर्ना जो भी तुम में से अमीर बनाया जाए वह सअद रज़ि से मदद लेता रहे क्योंकि मैंने उनको इसलिए माज़ूल नहीं किया कि वह किसी काम के करने से आजिज़ थे और न इसलिए कि उन्होंने कोई ख़यानत की थी। इसी तरह फ़रमाया मैं उस ख़लीफ़ा को जो मेरे बाद होगा पहले मुहाजिरीन के बारे में वसीयत करता हूँ कि वह उनके हुक़ूक़ उनके लिए पहचानें और उनकी इज़्ज़त का ख़्याल रखें। और मैं अन्सार के बारे में भी उम्दा सुलूक करने की वसीयत करता हूँ कि उन्होंने मुहाजिरीन से पहले अपने घरों में ईमान को जगह दी। जो उनमें से नेक काम करने वाला हो उसे स्वीकार किया जाये और जो उनमें से क़सूरवार हो इस से दरगुज़र किया जाए। और मैं सारे शहरों के बाशिंदों के साथ उम्दा सुलूक करने की उस को वसीयत करता हूँ क्योंकि वह इस्लाम के पुश्तपनाह हैं और माल के महसल हैं और दुश्मन के कुढ़ने का कारण हैं। और यह कि उनकी रजामंदी से उनसे वही लिया जाए जो उनकी जरूरतों से बच जाए। और मैं उसको बदवी अरबों के साथ नेक सुलूक करने की वसीयत करता हूँ क्योंकि वो अरबों की जड़ और इस्लाम का माद्दा हैं। ये कि उनके ऐसे मालों से लिया जाए जो उनके काम के न हूँ और फिर उन्हीं के मुहताजों को दे दिया जाए। और मैं उसको अल्लाह के ज़िम्मे और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़िम्मे करता हूँ कि जिन लोगों से वादा लिया गया हो उनका वादा उनके लिए पूरा किया जाए और उनकी हिफ़ाज़त के लिए उनसे सुरक्षा की जाए और उनसे भी इतना ही लिया जाए जितना उनकी ताक़त हो।

कहते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ि फ़ौत हो गए और उनकी तदफ़ीन से फ़राग़त हुई तो वे छः आदमी जमा हुए जिनका नाम हज़रत उमर रज़ि ने लिया था। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने कहा कि अपना मामला अपने में से तीन आदमियों के सपुर्द कर दो। हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने कहा मैंने अपना इख़तियार हज़रत अली रज़ि को दिया। हज़रत तलहा रज़ि ने कहा मैंने अपना इख़तियार हज़रत उसमान रज़ि को दिया। हज़रत सअद रज़ि ने कहा मैंने अपना इख़तियार हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को दिया। हज़रत अब्दुर्रहमान ने हज़रत अली रज़ि और हज़रत उसमान रज़ि से कहा कि आप दोनों में से जो भी इस बात से अलग होगा हम उसी के हवाले इस मामले को कर देंगे और अल्लाह और इस्लाम उसका निगरान होगा। वह आप में से उसी को चुनेगा जो उसके नज़दीक उत्तम है। ये सुनकर दोनों बुज़ुर्ग ख़ामोश रहे। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि ने कहा: क्या आप इस मामले को मेरे सपुर्द करते हैं? और अल्लाह मेरा निगरान है जो आप में से अफ़ज़ल है इस को चुनने के बारे में कोई भी कमी नहीं करूँगा। इन दोनों ने कहा अच्छा। फिर अब्दुर्रहमान इन दोनों में से एक का हाथ पकड़ कर अलग हुए और कहने लगे कि आप का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिश्ते में सम्बन्ध है और इस्लाम में भी वह स्थान है जो आप जानते ही हैं। अल्लाह आपका निगरान है। बताएं अगर मैं आपको अमीर बनाऊँ तो क्या आप ज़रूर इन्साफ़ करेंगे? अगर मैं उसमान को अमीर बनाऊँ तो आप उनकी बात सुनेंगे और उनका हुक्म मानेंगे? फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि दूसरे को अकेले में ले गए और उनसे भी वैसे ही कहा। जब उन्होंने पुख़्ता वादा ले लिया तो फिर अब्दुर्रहमान ने हज़रत उसमान रज़ि को कहा कि अपना हाथ उठाएं और उनकी बैअत की और हज़रत अली रज़ि ने भी उनकी बैअत की और घर वाले अन्दर आ गए और उन्होंने भी हज़रत उसमान रज़ि की बैअत की।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाब किस्सता अलबैअत हदीस 3700)

बहरहाल यह विस्तार मैं कुछ समय पहले भी वर्णन कर चुका हूँ यहां भी उनके हवाले से वर्णन कर दिया है। हज़रत ज़ुबैर रज़ि का अभी वर्णन चल रहा है। वह इंशा अल्लाह बाक़ी आइन्दा वर्णन होगा।

इस वक़्त कुछ जनाज़े हैं जो पढ़ाने हैं। मैं उनके बारे में बताऊँगा। पहला जनाज़ा जिन मरहूम का है वह हैं मेराज अहमद साहिब शहीद इब्न महमूद अहमद साहिब आफ़ डबगरी गार्डन ज़िला पेशावर। इन को विरोधियों ने 12 अगस्त को रात नौ बजे उनके मैडीकल स्टोर के सामने फायरिंग करके शहीद कर दिया था। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन।

विस्तार उसका यह है कि मरहूम अपने मैडीकल स्टोर से काम ख़त्म करके रात नौ बजे घर के लिए रवाना हुए थे कि अज्ञात लोगों ने फायरिंग कर दी और घटना स्थल से फ़रार हो गए। शहीद मरहूम को चार गोलीयां लगीं जिससे अवसर पर ही वफ़ात हो गई। शहादत के समय उनकी उम्र तक़रीबन 61 साल थी। शहीद मरहूम का बेटा अज़ीज़म यासिर अहमद घटना से कुछ मिनट पहले स्टोर से घर को रवाना हुआ था और मरहूम के मोबाइल से ही बेटे को घटना की सूचना दी गई। बेटा जब वापस मैडीकल स्टोर पहुंचा तो मरहूम की वफ़ात हो चुकी थी।

शहीद के ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ उनके दादा आदरणीय अहमद गुल साहिब और उनके भाई आदरणीय साहिब गुल साहिब के माध्यम से 1912 ई में हुआ था जो पश्तो के मशहूर शायर भी थे। और इस ख़ानदान का सम्बन्ध शेख़ मुहम्मदी पेशावर से था। परन्तु बाद में यह ख़ानदान ग़ैर मुबाइईन से जुड़ा रहा अर्थात लाहौरी जमाअत, पैग़ामी जो हम कहते हैं उनसे जुड़ गए थे। ख़िलाफ़त की बैअत नहीं की थी। आदरणीय मेराज साहिब ने अपने तीन भाईयों के साथ ख़ुद 1990-1991 ई में बैअत करके जमाअत अहमदिया मुबाईन में शामिल हुए जिसके बाद से उनके विरोध का सिल्सिला शहादत तक जारी रहा। उनके पास काम करने वाले नौकर भी केवल मज़हबी विरोध के कारण से उनके पास काम करने पर तत्पर नहीं थे। सोशल मीडिया पर भी पिछले कुछ समय से बहुत विरोध की मुहिम जारी थी जिसमें ताहिर नसीम के क़तल की घटना के नतीजे में और अधिक वृद्धि हुई और इसी परिप्रेक्ष्य में इलाक़े में यह मुहिम चलाई जा रही थी कि ईद के बाद क़ादियानियों के ख़िलाफ़ भरपूर तहरीक चलाई जाएगी और उनका इलाक़े से ख़ातमा कर देंगे और अगला टार्गेट इन्ही का इलाक़ा था जिसमें शहीद मरहूम रहते थे।

शहीद विशेष गुणों वाले थे। बाक़ायदा घर में नमाज़ बाजमाअत का प्रबन्ध था। ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा अक़ीदत थी। एम टी ए पर ख़ुत्बे सुनने का विशेष प्रबन्ध करते थे। जमाअत के प्रोग्राम में शामिल होने के इलावा मेहमान नवाज़ी, मानव जाति से हमदर्दी और ग़रीबों की सहायता विशेष गुण थे। ज़रूरतमंदों को मुफ़्त

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

दवाईयां दिया करते थे। ख़ानदान के हर व्यक्ति से सहानुभूति का सम्बन्ध था। भाइयों की फ़ैमलियों से बहुत मुहब्बत का सम्बन्ध था और यह जो भाईयों से मुहब्बत है वह अहमदियत स्वीकार करने के बाद और भी बढ़ गई थी। दावत इलल्लाह बहुत बढ़ चढ़ कर करते थे। तहरीक जदीद के नए माली साल के ऐलान के अवसर पर ओहदेदार जब उनके पास अगले वादे के लिए पहुंचते तो जेब में हाथ डालते और जितनी रक़म होती वह चंदे में दे देते। इस साल भी उन्होंने यही किया कि जो भी रक़म थी चंदे में अदा कर दी। उनके बेटे 2012 ई में आस्ट्रेलिया हिजरत कर गए थे। 2013 ई में शहीद भी अपने बेटे के पास आस्ट्रेलिया चले गए लेकिन फिर 2014 ई मैं अपने बेटे को लेकर वापस पाकिस्तान आ गए और बताया कि मेरी इच्छा है कि अपने इलाक़े और देश में रह कर ग़रीब लोगों की सेवा करूँ और वतन की मुहब्बत मुझे विवश कर रही है कि मैं पाकिस्तान में रिहायश रखूं। आस्ट्रेलिया में जब मैं दौरे पर गया हूँ तो उस वक़्त यह मुझे मिले थे।

लम्बे समय से जमाअत पेशावर के सैक्रेटरी ज़याफ़त थे। अहमदी तो वतन की मुहब्बत में हर क़ुर्बानी के लिए तैयार हैं और ये लोग जो तथा कथित वतन के ठेकेदार बने हुए हैं, उनका अहमदियों पर इल्ज़ाम लगाने और उनको नुक़्सान पहुंचाने के इलावा कोई काम नहीं लेकिन बहरहाल जो अहमदी की सरिशत में है वह तो उसके अनुसार ही काम करेंगे। लम्बे समय से जमाअत पेशावर के सैक्रेटरी ज़याफ़त थे और सारा जीवन इस ओहदे पर उनको सेवा की तौफ़ीक़ मिली। पिछले रमज़ान में एतिकाफ़ भी बैठे थे। उनके एक भाई फ़ारूक़ अहमद साहिब ट्रैफ़िक दुर्घटना में पहले फ़ौत हो गए थे और दूसरे भाई का स्टोर उनसे क़रीब ही है उनको भी ख़तरा ही रहता है। धमकियां मिलती रहती हैं। शहीद मरहूम के पीछे रहने वालों में पत्नी आदरणीया रशीदा मेराज साहिबा और तीन बेटे यासिर 27 साल और मुसव्विर अहमद 25 साल और जाज़िब 14 साल हैं। एक बेटी आयशा है जो एम बी बी एस की छात्रा हैं। जाज़िब को भी अपने स्कूल में काफ़ी विरोध का सामना है। अल्लाह तआला इन बच्चों को भी बुरों की बुराई से सुरक्षित रखे।

आजकल पाकिस्तान में विरोध फिर ज़ोरों पर है बल्कि मैंबरान असैंबली भी झूठी बातें हमारी तरफ़ सम्बन्धित करके लोगों की भावनाओं को भड़काने की कोशिश कर रहे हैं। ग़लत तौर पर उन लोगों की ग़लत हरकतों को पेश किया जाता है जिनका जमाअत से कोई सम्बन्ध ही नहीं है और फिर प्रोपेगंडा किया जाता है कि ये लोग अहमदी थे हालाँकि इन हरकत करने वालों का जमाअत से कोई सम्बन्ध ही नहीं है। इसी तरह आजकल सस्ती शोहरत के लिए हर घिसा पिटा इन्सान जो है वह यू ट्यूब पर जमाअत के ख़िलाफ़ अपने प्रोग्राम बना कर और ग़लत बातें मन्सूब करके समझता है कि मैं बड़े सवाब का काम कर रहा हूँ हालाँकि वे लोग नेक नीयत नहीं हैं। सिर्फ अपनी सस्ती शोहरत चाहते हैं। अल्लाह तआला इन बुरों की बुराई उन पर उलटाए।

इन दिनों में खासतौर पर पाकिस्तान की जमाअत को भी और दुनिया में भी, हमें बहुत अधिक दुआएं करनी चाहिऐं।

बहुत पढ़ें رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ
اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ

बहुत पढ़ें।

दुरूद शरीफ़ बहुत पढ़ें। अल्लाह तआला हर अहमदी को इन बुरों की बुराई से महफ़ूज़ रखे। जूँ-जूँ ये दुश्मनी बढ़ रही है तूं तूं हमें अधिक से अधिक अल्लाह तआला की तरफ़ झुकना चाहिए।

शहीद के बेटे यासिर साहिब कहते हैं मेरे पिता साहिब अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे और चंदों में हमेशा बढ़कर ख़ुलूस से हिस्सा लेते थे और इसके इलावा भी लोगों की फ़िक्र में लगे रहते थे और आर्थिक मदद करते थे। मेरे पिता साहिब बहुत बहादुर और निडर इन्सान थे। विरोध के बावजूद हमेशा बे-ख़ौफ़ रहते और अल्लाह पर भरोसा करते और हमेशा यही कहते कि मुझे किसी विरोध की पर्वा नहीं। मेरा ख़ुदा मेरे साथ है। कहते हैं निहायत सादा, विनम्र और दानी इन्सान थे। हमेशा लोगों की खुले दिल से मदद किया करते थे। बहुत मुत्तक़ी थे। ज़िक्रे इलाही में लीन रहने वाले, अल्लाह से बहुत मज़बूत सम्बन्ध और भरोसा रखने वाले थे। नमाज़ों की पाबंदी और तहज्जुद बाक़ायदगी से पढ़ा करते थे। सुबह शाम तिलावत क़ुरआन करीम किया करते थे और अपने बच्चों को इसकी नसीहत भी किया करते थे। इस बार रमज़ान में यह एतकाफ़ भी बैठे थे और कहते थे कि मैं ने ख़्वाब में इन बुरे आचरण वालों और मुनाफ़िक़ लोगों का बहुत बुरा अंजाम देखा है। और बड़ी तसल्ली से कहते थे कि हमारे लिए अल्लाह तआला ने बहुत कुछ सँभाल के रखा हुआ है।

अमीर साहिब आस्ट्रेलिया ने भी वर्णन किया है और इसी तरह और भी वहां आस्ट्रेलिया में रहने वाले लोगों ने भी लिखा है कि कुछ समय यहां आस्ट्रेलिया में रहे हैं। जमअत के बहुत फ़िदाई मैंबर थे और सक्रिय काम करने वाले थे। बहुत मिलनसार थे। मुहब्बत करने वाले थे। बहुत मेहमान नवाज़ थे और विनम्र इन्सान थे। बहुत निडर और जोशीले अहमदी थे। बहुत कम बोलने वाले और नर्म ज़बान थे और जब यह वापस जाने का उन्होंने फ़ैसला किया तो दोस्तों ने उन्हें पाकिस्तान के खतरे वाले हालात के कारण से जाने से रोका, बच्चों ने भी रोका परन्तु वह कहने लगे कि जमाअत की राह में अगर जान चली जाए तो इस से बढ़कर और क्या सौभाग्य होगा और यह सम्मान होगा। फिर वापस चले गए। और वहां ज़ईम अन्सारुल्लाह मेलबर्न हैं वह कहते हैं कि शहादत से दो दिन पहले मुझे उनका फ़ोन आया था कि विरोध बहुत अधिक बढ़ गया है लेकिन मैं डरने वाला नहीं हूँ।

दूसरा जनाज़ा जो है वह अज़ीज़म अदीब अहमद नासिर मुरब्बी सिल्सिला का है जो मुहम्मद नासिर अहमद डोगर साहिब ओहदी पूर नारोवाल के बेटे थे। 9 अगस्त को सत्ताईस साल की उम्र में थोड़ी बीमारी के बाद वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। जामिआ में यह दाख़िल हुए और जुलाई 2017 ई में उन्होंने जामिया की शिक्षा पूर्ण की। कार्य क्षेत्र में आए और इस्लाह व इरशाद मुक़ामी के अधीन यह काम कर रहे थे। उनका रिश्ता भी तय हो चुका था और शादी होने वाली थी। उनको बुख़ार चढ़ा, टाईफ़ाईड हुआ। फिर टाईफ़ाईड बिगड़ गया और सरसाम हो गया और इस दौरान में उन्होंने सावधानी भी नहीं की। अपने काम भी करते रहे और सफ़र भी करते रहे और बहरहाल दो तीन दिन थोड़ी बीमारी के बाद इस बुख़ार के कारण से उनकी वफ़ात हो गई।

उनके पिता नासिर डोगर साहिब कहते हैं कि मेरा बेटा बतौर वाकिफ ज़िन्दगी हम माता पिता के लिए गर्व का कारण था। निहायत नेक और सालेह बेटा, रोज़ा तथा नमाज़ का पाबंद, सादा तबीयत, नर्म लहजा, चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट। और ये गुण उनके और दोस्तों ने भी लिखे हैं जो मुरब्बी थे या उनसे सम्पर्क रखने वाले थे। हमेशा मुस्कुराने वाले थे। जमाअत की मुहब्बत और सेवा की बहुत अधिक भावना रखने वाले थे। बड़े हर दिल अज़ीज़ वजूद थे। चीनीकी जमाअत जहां आजकल सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे थे वहां तक़र्रुर से पहले ही बैयतुल ज़िक्र और मुरब्बी हाऊस बनाने के लिए बहुत जोश और जज़्बे से काम किया और अपने माहाना इलाउंस में से रक़म जमा करके, हालाँकि मामूली अलाउंस होता है, तीस हज़ार रुपए मस्जिद के बनवाने के लिए भिजवाए और काम शुरू करने की बार-बार नसीहत किया करते थे। हमेशा उनकी ज़बान से यही सुना कि काम शुरू करें अल्लाह तआला बरकत डालेगा।

उनकी माता नासिरा साहिबा कहती हैं कि अदीब अहमद का जन्म इसलिए हमारे लिए ख़ुशी का दिन था कि हमने उसको ख़ुदा की राह में वक़्फ़ कर दिया हुआ था। चार बेटियों के बाद ख़ुदा ने बेटा दिया तो ख़ुशी की सीमा न रही और ख़ुशी थी कि यह बड़ा हो कर मुरब्बी बनेगा और दूसरी ख़ुशी का दिन तब आया जब हमें जामिया बुला कर अदीब को शाहिद की सनद दी गई। इंतिहाई नेक और इताअत करने वाला बच्चा था। फ़ील्ड से रोज़ाना फ़ोन करके दवाईयों इत्यादि का पूछता। माँ की सेहत के बारे में पूछता और हमेशा कहता सेहत का ख़्याल रखा करें । बड़ा ख़ुदातरस वजूद था और यह ज़मींदार घराना है। जब गेहूं का समय आता तो अपनी माँ को कहते कि अधिक गेहूं रखें क्योंकि ज़रूरतमंद लोग भी आ जाते हैं, ग़रीबों की मदद भी करनी होती है उनको देनी भी है।

चीनीकी जमाअत जो ओहदीपूर का एक स्थान है इस में (मुरब्बी हाऊस एक कमरे पर आधारित था। वहां मुकम्मल सामान इत्यादि उपलब्ध न होने के बावजूद बड़े हौसले के साथ डयूटी दी। जावेद लंगाह साहिब मुरब्बी ज़िला फैसलाबाद वर्णन करते हैं कि मरहूम वक़्फ़ की हक़ीक़ी रूह को समझ कर ज़िन्दगी व्यतीत करने वाले

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

थे। बहुत जान से काम किया। जमाअत की बेहतरीन तर्बीयत के साथ ओहदेदारों से भरपूर सहयोग किया। तर्बीयती हवाले से विशेष ख़ुलफ़ाए किराम के किलप्स अहबाब जमाअत को सुनाते। किसी में कोई बुराई देखते तो इसकी इज़्ज़त नफ़्स का ख़्याल रखते हुए अलग उसे समझाते। हर एक के काम आते। ख़िलाफ़त से मुहब्बत, निज़ाम की इताअत, मिलनसारी, ख़ुश अख़लाक़ी, नर्म मिज़ाजी, आजिज़ी और विनय मरहूम के विशेष गुण थे। बड़े अदब वाले और हर हाल में ख़ुदा की रज़ा पर राज़ी रहने वाले थे। अल्लाह तआला उनके माँ बाप को भी शान्ति और सब्र प्रदान फ़रमाए। सदमा बर्दाश्त करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। बहनों को भी हौसला प्रदान फ़रमाए। मरहूम से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात ऊंचे करे।

अगला जनाज़ा जो पढ़ना है जिस का वर्णन करूँगा वह आदरणीय हमीद अहमद शेख़ साहब का है जो शेख़ मुहम्मद हुसैन साहिब के बेटे थे। 12 अगस्त को हार्ट अटैक के कारण 85 साल की उम्र में उनका देहान्त हुआ। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

आप हज़रत शेख़ नूर अहमद साहब रज़ि के पोते थे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। उनके पिता आदरणीय शेख़ मुहम्मद हुसैन साहिब ने बतौर अमीर जमाअत चिनयौट सेवा की तौफ़ीक़ पाई। बैअत के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत शेख़ नूर अहमद साहिब को हिदायत फ़रमाई थी कि वह अपने दोनों बेटों को शिक्षा के लिए कादियान भेजें अत: आदरणीय हमीद अहमद शेख़-साहिब के पिता शेख़ मुहम्मद हुसैन साहिब ने कादियान से मैट्रिक किया। जहां आपको हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो का सहपाठी होने का गौरव भी हासिल हुआ। हमीद अहमद शेख़ साहब के नाना हज़रत मौलवी अब्दुल क़ादिर साहिब रज़ि लुधियानवी थे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के 313 सहाबा में शामिल थे।

हमीद शेख़ साहब की शादी कपूरथला के हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब रज़ि की पोती से हुई। आदरणीय हमीद शेख़ साहब चार्टर्ड आरकेटिकट थे। अपनी शिक्षा यहां लन्दन में 1973 ई में पूर्ण की थी। रशीद अहमद साहिब विंबलडन वाले जो हैं जो हमारे रोटी प्लांट के भूतपूर्व इंचार्ज थे ये उनके भाई थे। मरहूम के पीछे रहने वालों में दो बेटे और एक बेटी शामिल हैं। मरहूम के एक बेटे अब्दूर्रज़्ज़ाक़ शेख़ साहब यहां हमारी आर्कीटेक्ट एसोसीएशन जो है IAAAE इसके वाइस चेयरमैन भी हैं। अब्दुर्रज़्ज़ाक़ शेख़ साहब लिखते हैं कि मेरे पिता एक प्यार करने वाले और अक़ीदतमंद बेटे, पति, बाप और दादा थे। सारे ख़ानदान के सदस्य उनसे मुहब्बत करते थे। आप जमाअत अहमदिया के बहुत ही नेक और मुख़लिस फ़र्द थे। कभी भी किसी भी रंग में जमाअत की सेवा का अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे। ख़लीफ़ा वक़्त को ख़त लिखते थे और अपने बच्चों को भी कहते थे कि ख़त लिखा करें। बच्चों को हर जगह स्थानीय जमाअत से समपर्क की ताकीद करते थे और बार-बार इस बारे में कहते रहते थे। बाजमाअत नमाज़ों के पाबन्द थे। बच्चों को ध्यान दिलाते रहते थे। जमाअत की माली तहरीकों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाले थे और अपनी वफ़ात से दो हफ़्ते पहले बड़ी ताकीद से अपने सारे बक़ायाजात अदा कर दिए। नाईजीरिया में भी यह रहे हैं। वहां भी मस्जिदों और मिशन हाऊसज़ की ज़मीनों में अपने पेशे के लिहाज़ से सुन्दरता के काम में मदद देते रहे और जब नाईजीरिया छोड़ के आए हैं तो अपनी गाड़ी वहां जमाअत को तोहफ़ा में दे आए थे। पाकिस्तान में क़ियाम के दौरान इस्लामाबाद IAAAE के चेयरमैन के तौर पर भी सेवा करते रहे। बहरहाल मुख़्तलिफ़ हैसियतों से उनको सेवा की तौफ़ीक़ मिली। अल्लाह तआला उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। मरहूम से रहम और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। जुम्अ: के बाद इंशा अल्लाह इन तीनों की नमाज़ जनाज़ा पढ़ूँगा।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 7 सितम्बर 2020 पृष्ठ 5 से 10)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ 1 का शेष

अत: تَوَاصَوْا بِالْحَقِّ में यह फ़रमाया कि वह अपने कर्मों की रोशनी से दूसरों को नसीहत करते हैं।

وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

और फिर उनकी यह आदत होता है। تَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ अर्थात सब्र के साथ उपदेश का तरीक़ा धारण करते हैं। जल्दी झाग मुंह पर नहीं लाते। यदि कोई मौलवी और मार्गदर्शक होकर इमाम और रहनुमा बन कर जल्दी भड़क उठता है और उसमें धैर्य और सब्र की शक्ति नहीं तो वह लोगों को क्यों नुक़्सान पहुँचाता है? दूसरा यह भी अर्थ है कि जो बातें सुनने वाला सब्र से न सुने, वह लाभ नहीं उठाता। हमारे विरोधी सहनशीलता का दिल लेकर नहीं आते और सब्र से अपनी कठिनाइयां प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उनकी तो यह अवस्था है कि वह किताब तक तो देखना नहीं चाहते और शोर मचाकर हक़ को छुपाने की कोशिश करते हैं। फिर वे फ़ायदा उठाएं तो कैसे उठाए। अबुजहल और अबूलहब में क्या था? यही अधीरता और व्याकुलता तो थी। कहते थे कि तू ख़ुदा की तरफ़ से आया है तो कोई नहर ले आ। इन हतभागों ने सब्र न किया और हलाक हो गए; वर्ना ज़ुबैदा वाली नहर तो आ ही गई। इसी तरह हमारे विरोधी भी कहते हैं कि हमारे लिए दुआ करो और वह शीघ्र स्वीकार हो जाएगी और फिर उस को हक़ तथा झूठ का स्तर ठहराते हैं और अपनी तरफ़ से कुछ मामले पेश करके कहते हैं कि यह हो जाएगा और वह हो जाएगा तो स्वीकार कर लें लेकिन आप किसी शर्त के नीचे नहीं आते। अफ़सोस यही लोग हैं जो لَا يَخَافُ عُقْبٰهَا (अश्शम्स:14) के चरितार्थ हैं। याद रखो धैर्य करने वाला ही हृदय के खुलने का रुत्बा पाता है। जो सब्र नहीं करता वह मानो ख़ुदा पर हुकूमत करता है। ख़ुद उस की हुकूमत में रहना नहीं चाहता। ऐसा गुस्ताख़ और दिलेर जो ख़ुदा तआला के प्रताप और महानता से नहीं डरता वह वंचित कर दिया जाता है और उसे काट दिया जाता है।

सच्चों की संगत

फिर यह बात भी याद रखनी चाहिए कि सब्र की हक़ीक़त में से यह भी ज़रूरी बात है कि كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ (अत्तौब:119) सच्चों की संगत में रहना ज़रूरी है।

बहुत से लोग हैं जो दूर बैठे रहते हैं और कह देते हैं कि कभी आएँगे, इस समय फ़ुर्सत नहीं है। भला तेरह 1300 सौ साल के मौऊद सिल्सिला को जो लोग पा लें और इसकी सहायता में शामिल न हूँ और ख़ुदा और रसूल के मौऊद के पास न बैठें, वे सफलता पा सकते हैं? हरगिज़ नहीं।

हम ख़ुदा ख़्वाही व हम दुनियाए दूँ
ईं ख़्याल अस्त व मुहाल अस्त व जनों

धर्म तो चाहता है कि संगत हो फिर संगत से दूरी हो तो पवित्रता को प्राप्त करने की उम्मीद क्यों रखता है? हमने कई बार अपने दोस्तों को नसीहत की है और फिर कहते हैं कि वे बार-बार यहां आकर रहें और लाभ उठाएं परन्तु बहुत कम ध्यान किया जाता है। लोग हाथ में हाथ देकर तो धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता कर लेते हैं परन्तु इसकी पर्वा कुछ नहीं करते। याद रखो क़ब्रें आवाज़ें दे रही हैं और मौत हर समय क़रीब होती जाती है। हर एक सांस तुम्हें मौत के क़रीब करता जाता है और तुम इसे फ़ुर्सत की घड़ियाँ समझते जाते हो अल्लाह तआला से धोखा करना मोमिन का काम नहीं है। जब मौत का समय आ गया फिर क्षण आगे पीछे न होगा। वे लोग जो इस सिल्सिला की क़दर नहीं करते और उन्हें कोई महानता उस की मालूम ही नहीं उनको जाने दो। परन्तु इन सबसे बढ़कर बदक़िस्मत और अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाला तो वे है जिसने इस सिल्सिला को पहचाना और इस में शामिल होने की फ़िक्र की लेकिन इस ने कुछ क़दर न की। वे लोग जो यहां आकर मेरे पास बहुत अधिक नहीं रहते और उन बातों से जो ख़ुदा तआला हर रोज़ अपने सिल्सिला के समर्थन में प्रकट करता है नहीं सुनते और देखते, वे अपनी जगह पर कैसे ही नेक और मुत्तक़ी और परहेज़गार हूँ। परन्तु मैं यही कहूँगा कि जैसा चाहिए उन्होंने सम्मान नहीं किया। मैं पहले कह चुका हूँ कि इल्म की पूर्णता के बाद व्यावहारिक की पूर्णता की ज़रूरत है। अत: व्यावहारिक पूर्णता इल्म की पूर्णता के असंभव है और जब तक यहां आकर नहीं रहते। इल्मी पूर्णता कठिन है। कई बारे ख़ुतूत आते हैं कि अमुक आदमी ने एतराज़ किया और हम जवाब न दे सके। इस का कारण क्या है? यही कि वे लोग यहां नहीं आते और उन बातों को नहीं सुनते जो ख़ुदा तआला अपने सिल्सिला के समर्थन में इल्मी रूप से ज़ाहिर कर रहा है।

अत: यदि तुम वास्तव इस सिल्सिला को पहचानते हो और ख़ुदा पर ईमान लाते हो और धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने का सच्चा वादा करते हो, तो मैं पूछता

हूँ कि इस पर अनुकरण क्या होता है।كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ(अत्तौब:119) का हुक्म स्थगित हो चुका है? अगर तुम वास्तव में ईमान लाते हो और सच्ची ख़ुश क़िसमती यही है तो अल्लाह तआला को मुक़द्दम कर लो। यदि इन बातों को व्यर्थ और फ़ुज़ूल समझोगे तो याद रखो ख़ुदा तआला से हंसी करने वाले ठहरोगे।

सूरत फ़ातिहा में कुरआन करीम के समस्त मआरिफ़ दर्ज हैं

सूरत अल्फातिहा में जो क़ुरआन शरीफ़ का बारीक़ नक़्शा है और उम्मुल किताब भी जिसका नाम है, बहुत ध्यान दो कि इस में सांकेतिक रूप में क़ुरआन करीम के समस्त मआरिफ़ दर्ज हैं। अत: अल्हमदो लिल्लाह से इस को शुरू किया गया है जिसके अर्थ यह हैं कि समस्त प्रशंसाएं अल्लाह ही के लिए हैं। इस में यह शिक्षा है कि समस्त लाभ और सभ्याचारिक ज़िन्दगी के सारी आराम अल्लाह ही की तरफ़ से आती हैं, क्योंकि हर किस्म की सज़ा का सज़ावार जब कि वही है तो वास्तविक इनाम का पाने वाला भी वही हो सकता है वर्ना लाज़िम आएगा कि किसी प्रकार की प्रशंसा तथा तारीफ का अधिकारी वह नहीं भी है, जो कुफ्र की बात है। अत: अल्हम्दो लिल्लाह में कैसी तौहीद की सार गर्भित शिक्षा पाई जाती है, जो इन्सान को दुनिया की समस्त चीज़ों की उबूदीयत और अपने आप को लाभ न पुहंचाने की तरफ़ ले जाती है और स्पष्ट रूप से यह याद दिलाती है कि प्रत्येक लाभ और वास्तविक फायदा और मूल रूप से ख़ुदा तआला ही की तरफ़ से आता है। क्योंकि समस्त प्रशंसाएं उसी के लिए हैं। अत: प्रत्येक लाभ और फायदा में ख़ुदा तआला ही को प्रथम करो। इसके सिवा कोई काम आने वाला नहीं है। अल्लाह तआला की इच्छा के अगर विरुद्ध हो तो सन्तान भी दुश्मन हो सकती है। और हो जाती है।

अल्लाह तआला की बुनियादी विशेषताएं

फिर इसी सूरत फ़ातिहा में इस ख़ुदा का नक़्शा दिखाया गया है, जो क़ुरआन शरीफ़ मनवाना चाहता है और जिसको वह दुनिया के सामने प्रस्तुत करता है। अत: उसके चार गुणों को क्रम से वर्णन किया है जो उम्महातुस्सिफात (सब गुणों का मां या मूल) कहलाती हैं। जैसे सूरह फ़ातिहा उम्मुल किताब है, वैसे ही जो गुण अल्लाह तआला के इस में वर्णन किए गए हैं। वे भी उम्महातुस्सिफात ही हैं और वे ये हैं रब्बुल आलमीन, अर्रहमान, अर्रहीम, मालेके यौमिद्दीन। इन चार गुणों पर ग़ौर करने से ख़ुदा तआला का मानो चेहरा नज़र आ जाता है। रबूबियत का दायरा बहुत ही व्यापक और सब के लिए है और इस में समस्त सृष्टियों की सारी अवस्थाओं में तर्बीयत और इसकी पूर्णता का प्रबन्ध की तरफ़ इशारा है। ग़ौर तो करो जब इन्सान अल्लाह तआला की रबूबियत पर सोचता है तो इसकी उम्मीद कितनी बड़ी हो जाती है और फिर रहमानियत यह है कि बिना किसी का करने वाले के काम के उन माध्यमों को उपलब्ध करता है जो वजूद की हस्ती के लिए ज़रूरी हैं। देखो चांद, सूरज, हवा,पानी इत्यादि हमारी दुआ और मांगें बिना और बिना हमारे किसी कर्म के उसने हमारे वजूद के क़ायम रखने के लिए काम में लगा रखे हैं और फिर रहीमियत यह है कि कर्मों को नष्ट न करे और मालिके यौमिद्दीन का तक़ाज़ा यह है कि सफल कर दे। जैसे एक व्यक्ति परीक्षा के लिए बहुत मेहनत से तैयारी करता है परन्तु परिक्षा में दो-चार नम्बरों की कमी रह जाती है तो दुनयावी निज़ाम और सिल्सिला में तो इस का लिहाज़ नहीं करते और इस को गिरा देते हैं, परन्तु ख़ुदा तआला की रहीमीत उस की पर्दापोशी फ़रमाती है और इस को पास करा देती है। रहीमियत में एक किस्म की पर्दापोशी भी होती है। ईसाइयों का ख़ुदा ज़रा भी पर्दापोश नहीं है; वर्ना कफ़्फ़ारा की क्या आवश्यकता रहती? ऐसा ही आर्यों का खुदा न रब है न रहमान है क्योंकि वह तो बिना काम और बिना कर्म के कुछ भी किसी को प्रदान नहीं कर सकता। यहां तक कि वेदों के नियम के अनुसार गुनाह करना भी ज़रूरी मालूम कर देता है। जैसे एक आदमी को अगर किसी उसके कर्म के बदला में गाय का दूध देना अभीष्ट है तो इसके मुक़ाबला में यह भी ज़रूर है कि कोई ब्रहमणी (अगर यह रिवायत सही हो)व्यभिचार करे ताकि इस दुराचार तथा निर्लज्जता के बदला में वह गाय की योनि में जाए और इस काम करने वाले को दूध पिलाए, चाहे वह उसका पति ही क्यों न हो। अत: जब तक ऐसा सिल्सिला न होगा , कोई काम करने वाला अपने कर्म का बदला वैदिक ईश्वर के ख़ज़ाना से पा नहीं सकता, क्योंकि उसका सारा सिलसिला जोड़तोड़ ही से चलता है।

परन्तु इस्लाम ने वह ख़ुदा प्रस्तुत किया है जो समस्त प्रशंसाओं का अधिकारी है वह वास्तविक देने वाली हस्ती है वह रहमान है जो बिना काम करने वाले के काम के के अपना फ़ज़ल करता है। फिर मालिकियत यौमिद्दीन जैसा कि मैं ने अभी कहा है, सफल करती है। दुनिया की गर्वनमेंट कभी इस बात का ठेका नहीं ले सकती कि हर एक बी ए पास करने वाले को ज़रूर नौकरी देगी परन्तु ख़ुदा तआला की गर्वनमैंट, पूर्ण गर्वनमैंट और असीमित ख़ज़ानों का मालिक है। इसके निकट कोई कमी नहीं। कोई कर्म करने वाला हो। वह सबको सफल करता है और नेकियों और नेकियों के मुक़ाबला में कुछ कमज़ोरियों और त्रुटियों की पर्दापोशी भी फ़रमाता है। वह तव्वाब (तौब: स्वीकार करने वाला) भी है और शर्मीला भी है। अल्लाह तआला को हज़ारों दोष अपने बंदों के पता होते हैं परन्तु वह प्रकट नहीं करता। हाँ एक वक़्त ऐसा आ जाता है कि बेबाक हो कर इन्सान अपने दोषों में तरक़्क़ी पर तरक़्क़ी करता जाता है और ख़ुदा तआला की शर्म और पर्दापोशी से लाभ नहीं उठाता, बल्कि नास्तिकता की रग इस में ज़ोर पकड़ती जाती है। तब ख़ुदा तआला की ग़ैरत मांग नहीं करती कि इस बेबाक को छोड़ा जाए, इस लिए वह अपमानित किया जाता है, मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी को मुहम्मद हुसैन के बारे में इल्हाम हुआ कि इस में कोई दोष है। उसने चाहा कि वह प्रकट कर दें, मगर उन्होंने यही कहा कि अल्लाह तआला की शर्म रोक है। फिर उन्होंने उसके बारे में एक रोया में देखा कि इसके कपड़े फट गए हैं; अत: अब वह रोया पूरी हो गई।

अत: मेरा अभिप्राय तो केवल यह था कि रहीमियत में एक विशेषता पर्दापोशी की भी है, मगर इस पर्दापोशी से पहले यह भी ज़रूरी है कि कोई कर्म हो और इस कर्म के अनुसार अगर कोई कमी या त्रुटि रह जाए तो अल्लाह तआला अपनी रहीमियत से इसकी पर्दापोशी फ़रमाता है।

अत: मेरा मतलब तो सिर्फ यह था कि रहीमियत में एक विशेषता पर्दापोशी की भी है, मगर इस पर्दापोशी से पहले यह भी ज़रूरी है कि कोई कर्म हो और इस कर्म के बारे में अगर कोई कमी या त्रुटि रह जाए तो अल्लाह तआला अपनी रहीमियत से इसकी पर्दापोशी फ़रमाता है। रहमानियत और रहीमियत में अन्तर यह है कि रहमानियत में काम और कर्म को कोई दख़ल नहीं होता परन्तु रहीमियत में कार्य तथा काम को दख़ल है। लेकिन कमज़ोरी भी साथ ही है। ख़ुदा का रहम चाहता है कि पर्दापोशी करे। इसी तरह मालिक यौमुद्दीन वह है कि असल मक़सद को पूरा करे। ख़ूब याद रखो कि यह सब विशेषताओं की मां आध्यात्मिक रूप से ख़ुदा नुमा तस्वीर हैं। इन पर ग़ौर करते ही शीघ्र ख़ुदा सामने हो जाता है और रूह एक आन्नद के साथ उछल कर उसके सामने सिज्दा में चली जाती है; अत: अल्हम्दो लिल्लाह से जो शुरू किया गया था , तो ग़ायब की सूरत में वर्णन किया है, लेकिन इन चारों विशेषताओं के वर्णन बाद शीघ्र वर्णन की शैली तबदील हो गई है,क्योंकि इन गुणों ने ख़ुदा को सामने हाज़िर कर दिया है। इस लिए हक़ था और वर्णन शैली की उच्चता की मांग थी कि अब ग़ायब ना रहे बल्कि हाज़िर का रूप धारण किया जाए। अत: इस दायरा की पूर्णता के तक़ाज़ा ने सम्बोधित की तरफ़ मुँह फेरा और اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ।(सूरह अल्फातिहा 5) याद रखना चाहिए कि اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ में किसी तरह की दूरी नहीं है हां اِيَّاكَ نَعْبُدُ में एक प्रकार से ज़माना को प्राथमिकता है क्योंकि जिस अवस्था में केवल अपनी रहमानियत से बिना हमारी दुआ और निवेदन के हमें इन्सान बनाया और विभिन्न प्रकार की शक्तियां और नेअमतें प्रदान फ़रमाएं। उस समय हमारी दुआ न थी बल्कि केवल उसका फ़ज़ल हमारे साथ था और यह प्राथमिकता है।

रहमानियत और रहीमियत

मैं फिर बयान करता हूँ और यह बात याद रखने के योग्य है कि रहम दो प्रकार का होता है। अव्वल रहमानियत और दूसरा रहीमियत के नाम से जाना जाता है।

रहमानियत तो ऐसा फ़ैज़ान है कि जो हमारे वजूद और हस्ती से भी पहले शुरू हुआ। जैसे अल्लाह तआला ने हमारे वजूद से पहले ही धरती तथा आकाश , चांद तथा सूर्य और धरती तथा आकाशों की अन्य चीज़ें पैदा की हैं जो सबकी सब हमारे काम आने वाली हैं और काम आती हैं। दूसरों हैवान भी इन से लाभ उठाते हैं। परन्तु वे जब कि स्वंय इन्सान ही के लिए लाभदायक हैं और इन्सान ही के काम आते हैं। तो मानो सामूहिक तौर पर इन्सान ही इन सबसे लाभ उठाने वाला ठहरा। देखो शारीरिक मामलों में कैसी उच्च स्तर की खुराक खाता है। उच्च कवालटी का गोश्त इन्सान के लिए है। टुकड़े और हड्डियां कुत्तों के लिए। जिस्मानी तौर पर तो किसी हद तक हैवान भी सम्मिलित हैं, परन्तु रूहानी आन्नद में जानवर साझी नहीं हैं। अत: ये दो प्रकार की रहमतें हैं। एक वह जो हमारे वजूद से पहले ही दी जाती हैं और दूसरी वह जो रहीमियत की शान के नमूने हैं और वह दुआ के बाद पैदा होते हैं और उन में एक काम की ज़रूरत होती है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 183 से 185 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

फ्लडा में अब और अधिक अमन फैलेगा। आख़िर पर उन्होंने जमाअत को मस्जिद के पूर्ण होने पर फिर मुबारकबाद प्रस्तुत की और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ को इस अवसर के अनुसार एक तोहफ़ा प्रस्तुत किया।

इसके बाद Kurt Albrecht साहिब ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। महोदय Roundtable of Religions Fulda के चेयरमैन हैं। उन्होंने सबसे पहले समस्त हाज़रीन को मुबारकबाद कहा और शुक्रिया अदा किया कि उनको भी इस फंक्शन पर सम्बोधन करने का अवसर दिया जा रहा है। महोदय ने कहा कि फ़ुलडा में 100 से अधिक देशों के लोग इकट्ठे रहते हैं। इन सब का सम्बन्ध विभिन्न धर्मों से है। इसलिए एक ऐसी संस्था का होना ज़रूरी है जो सबको लेकर चले।

फिर महोदय ने कहा कि Roundtable of Religions Fulda का बिल्कुल यही उद्देश्य है कि विभिन्न धर्मों की जमाअतें मिलकर बैठें और प्यार और मुहब्बत से शहर में रहें। इसके बाद महोदय ने अपनी इस संस्था का परिचय कराते हुए कहा कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत भी शुरू से ही इस संस्था में शामिल है। इतने विभिन्न धर्मों और विभिन्न फ़िर्क़ों के लोग जब इकट्ठे होते हैं तो सबसे ज़रूरी यह बात होती है कि आपस में भाईचारा पैदा हो और जो बातें एक दूसरे में एक जैसी हों, उन पर-ज़ोर दिया जाए। फिर महोदय ने कहा कि यह बात भी खासतौर पर सम्मुख रखनी चाहिए कि इन्सानी क़दरों को देखा जाए। तब ही सब इन्सान मुहब्बत और अमन में इकट्ठे होकर रह सकते हैं। आख़िर पर उन्होंने कहा कि आज आप लोगों की जमाअत के लिए एक निहायत ही प्रमुख दिन है और उम्मीद है कि आपको अब एक ऐसा घर मिल गया होगा, जिसमें आप अपनी ज़रूरतों के अनुसार अपने प्रोग्राम आयोजित कर सकेंगे

ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़

इसके बाद 6 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने ख़िताब फ़रमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने तशह्हुद,ताव्वुज़ और तस्मिया के बाद फ़रमाया

सम्मान्नीय मेहमान! अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातहो

अल्लाह तआला की आप सब पर सलामती और रहम हो। सबसे पहले तो मैं आप सब लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ जो आज हमारे इस मस्जिद के फंक्शन में शामिल होने के लिए तशरीफ़ लाए। जमाअत अहमदिया के लिए तो अवश्य यह बहुत ख़ुशी का अवसर है, खासतौर पर फ़ुलडा के लोगों के लिए कि अल्लाह तआला ने उन्हें एक स्थान पर जमा होने के लिए, नमाज़ अदा करने के लिए ,एक स्थान उपलब्ध किया। अब वह आसानी से इसमें अपनी शिक्षा अनुसार 5 समय नमाज़ों के लिए, इबादत के लिए इकट्ठे हो सकते हैं। लेकिन इस इबादत के स्थान को, इस मस्जिद के बनाने को संभव बनाने के लिए यहां के लोगों की भी बहुत भूमिका है। इस दृष्टि से मैं आप सब लोगों का ,इस शहर के लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप लोगों ने यहां मस्जिद बनाने करने की आज्ञा दी। कौंसिल का शुक्रिया, मेयर का शुक्रिया जिन्होंने इस बनाने में हमारी मदद की। मुझे बहुत सारे चेहरे नज़र आ रहे हैं, बल्कि अधिकतर अहमदियों के नहीं हैं, और शायद मुसलमान भी नहीं हैं। शायद अहमदी मुसलमानों के अतिरिक्त एक दो मुसलमान हों। आप लोगों का यहां आना आपके खुले दिल का प्रतिनिधित्व करता है। इस शहर में जिसकी तारीख़ यह बताती है कि यहां ईसाईयत बहुत पुरानी है और इस दृष्टि से, ईसाइयत के हवाला से इसकी एक तारीख़ी हैसियत है। यहां मस्जिद बनाना अवश्य यहां के लोगों का जो ईसाई धर्म से सम्बन्ध रखते हैं, एक ऐसा अनुकरण है जो उनकी रोशन दिमाग़ी और रोशन ख़्याली को प्रकट करता है। इस अनुकरण से जिससे आप लोगों की रोशन दिमाग़ी का इज़्हार होता है, यह पता चलता है कि आप लोग सब धर्मों के साथ मिल-जुल कर रहना चाहते हैं। अभी एक तक़रीर करने वाले ने जो यहां राउंड टेबल के प्रतिनिधि थे, उन्होंने बताया कि यहां 100 से अधिक कौमें आबाद हैं और विभिन्न धर्म आबाद हैं। इन सब का यहां आबाद होना , इस शहर में जिसकी ईसाइयत के हवाला से बहुत महत्त्वपूर्ण है यहां के ईसाई लोगों के खुले दिल होने को प्रकट करता है। मैं फिर कहना चाहूँगा कि इसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने फ़रमाया इस युग में जब कि दुनिया एक हो चुकी है। सम्पर्कों के द्वारा से, जो आने जाने के सम्पर्क हैं, टीवी है, इंटरनैट है और ट्रांसपोर्ट के माध्यमों से दुनिया एक हो चुकी है। वह सफ़र जो आज से कुछ दहाईयां पहले या100 साल पहले दिनों बल्कि महीनों में होता था वह अब कुछ घंटों में हो जाता है। इस दृष्टि से अब हम एक हो चुके हैं। अब यह बात हम सबको समझ लेनी चाहिए कि दुनिया की तरक़्क़ी हमें एक कर रही है। इस तरक़्क़ी का तब ही लाभ है जब हम आपस के इस मिलाप को अपने लाभ के लिए भी प्रयोग करें। बजाय इसके कि दिलों में एक दूसरे के ख़िलाफ़ शंकाएं पैदा हों और एक दूसरे से भय पैदा हो, एक दूसरे के लिए नेक भावनाएँ पैदा होनी चाहिऐं और यह हर पक्ष का काम है, चाहे वह ईसाई हैं, मुसलमान हैं, यहूदी है ,हिन्दू हैं या कोई और हैं, कि हम एक दूसरे के लिए नेक भावनाएँ अपने दिलों में पैदा करें ताकि इस चीज़ का लाभ उठाया जाए जिसने इस युग में लोगों को एक कर दिया है और दुनिया एक ग्लोबल विलेज बन चुकी है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने फ़रमाया हमारे नैशनल अमीर साहिब ने यह भी बताया कि यहां एक म्यूज़ियम भी है। अवश्य इस म्यूज़ियम में पुरानी चीज़ें रखी होंगी। पुरानी चीज़ों को सँभालना बहुत अच्छी बात है। पुरानी चीज़ों को तब ही preserve किया जा सकता है जब उसके नेक परिणाम से लाभ उठाया जाए और कई ऐसी चीज़ें जिनसे भूतकाल में नुक़्सान हुआ हो, इन अनुभवों से लाभ उठाते हुए इन नुक़्सानों से बचा जा सके। मुझे यह तो मालूम नहीं कि इस म्यूज़ियम का विस्तार क्या है लेकिन प्राय म्यूज़ियम में हर किस्म की चीज़ें रखी जाती हैं। और म्यूज़ियम की यह चीज़ें जहां हमें अपनी तारीख़ से आगाह करती हैं वहां हमें अगली के लिए नए रास्ते भी दिखाती हैं। इसलिए मैं समझता हूँ कि यहां रहने वाले हर व्यक्ति को चाहे वह मुसलमान हैं, ईसाई हैं या किसी भी धर्म से सम्बन्ध रखने वाला हैं ,या नास्तिक हैं, इस से लाभ उठाना चाहिए। फिर यहां शिक्षा के अवसर हैं। मुझे बताया गया है कि यह स्थान शैक्षिक दृष्टि से भी बहुत अहम है। यहां के लोगों में शिक्षा की तरफ़ भी रुझान है। शिक्षा प्राप्त करने का तब ही लाभ है, जब वह दिलों को खोले। असल शिक्षा वह है जो दिलों में रोशनी पैदा करने वाली हो। इस से ज़हन में वुसअत भी पैदा हो और हौसला भी अधिक पैदा हो और फिर एक दूसरे के भावनाएँ का सम्मान करने का एहसास भी पैदा हो। तब ही इस शिक्षा का लाभ है, नहीं तो अगर खुला हौसला नहीं, एक दूसरे की भावनाएं समझने की तरफ़ ध्यान नहीं एक दूसरे के आयोजनों और ख़ुशी के अवसरों में शिरकत करने का हौसला नहीं तो फिर शिक्षा व्यर्थ हो जाती है। इस दृष्टि से मुझे ख़ुशी है कि मैं यहां बहुत से ऐसे चेहरे देख रहा हूँ जो ऐसे फंक्शन में आए हैं, जो विशेष रूप से धार्मिक फंक्शन है, जिसका आप लोगों से सीधा कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं दुआ करता हूँ कि यह खुले दिल का इज़हार जहां यहां रहने वाले ईसाइयों की तरफ़ से हो रहा है वहां यहां रहने वाले मुसलमानों की तरफ़ से भी हो और सबसे बढ़कर अहमदी मुसलमानों की तरफ़ से हो और अन्य धर्मों वालों की तरफ़ से भी हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने फ़रमाया सारा साहिबा जो लूथर चर्च की प्रतिनिधि हैं, ने बड़ी अच्छी बात की कि ख़ुदा की इबादत एक जैसी चीज़ है, जिसकी तरफ़ हमें ध्यान देना चाहिए और ख़ुदा की इबादत के साथ अमन का पैग़ाम भी मिलता है। यही वास्तविक चीज़ है कि अल्लाह तआला की इबादत करने वाले वास्तम में वही लोग हैं जो अमन फैलाने वाले हों। यही चीज़ है जो इन्सानी क़दरों को स्थापित करती है। मदीना में इस्लाम धर्म के संस्थापक के ज़माना में नजरान से एक ईसाई वफद मुलाक़ात को लिए आया। बातचीत हो रही थी तो इस समय में उनकी इबादत का वक़्त हो गया। बड़े बेचैन थे कि अब वह कहाँ इबादत करेंगे। तो उस वक़्त हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी परेशानी देखकर पूछा कि क्या कारण है तो मालूम हुआ कि इबादत का समय हो रहा है और वह स्थान तलाश कर रहे हैं। उस वक़्त वह मस्जिद नबवी में बैठे हुए थे। तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें फ़रमाया कि परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। यह मस्जिद भी एक ख़ुदा की इबादत के लिए बनाई गई है। तुम इस में अपनी इबादत कर सकते हो। अत: उन्होंने उस मस्जिद में अपनी इबादत की। यही वह वास्तविक चीज़ है, जिससे वास्तविक अमन भी स्थापित होता है। और आपस में इंटर फ़ेथ सम्बन्ध बेहतर होते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने फ़रमाया इस्लाम इसी बात की शिक्षा देता है। आज इस्लाम और मुसलमान का नाम इसी कारण से बदनाम हो गया है कि यह अमन को बर्बाद करने वाले हैं। जब कि"इस्लाम "नाम का अर्थ ही अमन है। अगर एक मुसलमान दूसरे को अमन उपलब्ध नहीं करता तो वह मुसलमान ही नहीं है। इसलिए इस्लाम धर्म के संस्थापक ने फ़रमाया है कि वास्तविक मुसलमान वही है जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे लोग सुरक्षित रहें।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 24 September 2020 Issue No.39

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अत: वास्तविक इस्लाम तो यही है जो अमन देता है, अम्न पसंद शहरी वह है जो किसी का अमन तबाह नहीं कर रहा, उसके साथ तुम भी अमन से रहो। और अगर कहीं सुधार की ज़रूरत पड़े तो क़ानून हाथ में नहीं लेना जैसा कि आजकल के कई उग्रवादी ग्रुप हरकतें कर रहे हैं। जो बिल्कुल इस्लामी शिक्षा के ख़िलाफ़ हैं। बल्कि क़ानून के इदारे मौजूद हैं, उनकी मदद लो। इस्लाम की वास्तविक शिक्षा यही है कि किसी का अमन बर्बाद नहीं करना। ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है कि एक इन्सान का क़तल समस्त इन्सानियत का क़तल है और एक इन्सान की जान बचाना समस्त इन्सानियत की जान बचाना है। यही वह शिक्षा है जो धर्मों की शिक्षा है और यही वह शिक्षा है जिस को इस्लामी शिक्षा ने और क़ुरआन करीम ने अपने अंदर समोया है। अत: वास्तविक इस्लामी शिक्षा तो यह है कि जिसको अगर सही समझा जाए तो अमन प्यार और मुहब्बत के अतिरिक्त और कुछ नहीं है और यही वह मिशन है जिसको लेकर जमाअत अहमदिया मुस्लिमा सारी दुनिया में इस्लाम की वास्तविक तस्वीर दिखा रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने फ़रमाया दूसरे मुक़र्रर थे, जो राउंड टेबल आफ़ फ्लड ए के प्रतिनिधि थे, जिन्होंने बताया था यहां 100 से अधिक क़ौमों के लोग हैं। उन्होंने यह भी बताया कि विभिन्न धर्मों के लोग एक स्थान जमा होते हैं। यह बहुत अच्छी बात है कि धर्मों के लोग एक स्थान पर जमा हुए और फिर नियमित उसके लिए हर साल उन्होंने एक आयोजन आयोजित करना शुरू कर दिया। उनसे यह बात सुनकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि इस आयोजन में जमाअत अहमदिया की नुमाइंदगी भी है। उन्होंने बड़ी अच्छी बात की कि असल चीज़ इन्सानी क़द्रें हैं। यही असल चीज़ है, इन्सानी क़द्रें ही हैं जो हक़ीक़त में हमें दूसरे जानवरों से अलग करती हैं। अल्लाह तआला ने इन्सान को समस्त सृष्टियों में सर्वोत्कर्ष सृष्टि बनाया है, अगर हमने भी दूसरे जानवरों की तरह एक दूसरे को नोचना, घसीटना है तो हमारे और दूसरे जानवरों में क्या अन्तर है। अल्लाह तआला ने हमें जो दिमाग़ दिया है, अगर उसे अवसर पर प्रयोग नहीं करना तो फिर उस समस्त सृष्टियों में सर्वोत्कर्ष सृष्टि का हिस्सा होना व्यर्थ है। असल तो क़द्रें तब ही स्थापित होती हैं, जब हम अपने आपको दूसरे जानवरों से बेहतर करके बताएं। यही प्रथामिकता है जो अल्लाह तआला ने सिर्फ और सिर्फ इन्सान में पैदा की है कि दिमाग़ दिया है, जिसका वह प्रयोग कर सकता है। और इसी दिमाग़ को प्रयोग करके वह इन्सानी क़दरों को स्थापित कर सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने फ़रमाया हमारे संस्थापक जमाअत अहमदिया जिनको हम मसीह मौऊद महदी मअहूद मानते हैं। उनके ज़माना में भी एंटर फ़ेथ कान्फ्रैंस हुई थी। इस कान्फ्रैंस में यह शर्त रखी गई थी कि हर धर्म अपने धर्म के बारे में लैक्चर दे और यह शर्त थी कि किसी धर्म की बुराई वर्णन नहीं करनी, किसी धर्म का उपहास नहीं करना किसी धर्म के ख़िलाफ़ कोई बात नहीं करनी। बल्कि सिर्फ अपने धर्म की खूबियां प्रत्येक के सामने रखनी हैं। जैसा कि मैंने कहा कि अल्लाह तआला ने इन्सान को अक़ल दी है, समस्त सृष्टियों में सर्वोत्कर्ष सृष्टि बनाया है, अब हर इन्सान का काम है कि वह खूबियां देखे और ख़ुद जज करे। अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है धर्म के मामला में कोई जबर नहीं। कोई किसी के धर्म को ज़बरदस्ती बदल नहीं सकता। जब इन्सानी अक़ल है, इस को सोचने और समझने और परखने की अल्लाह तआला ने समझ दी हुई है तो फिर कोई ऐसी फ़िक्र की बात भी नहीं है। हर धर्म की बात सुन लेना और हर धर्म की शिक्षा को समझना और परखना, यह रोशन विचार है। यही वह चीज़ है जो इन्सानी क़दरों का भी इज़हार करती है। यही वो चीज़ है जिससे अमन तथा सलामती और प्यार, मुहब्बत का सन्देश उभर कर सामने आता है और और अधिक फैलता है। अत: हमें हमेशा इन्सानी क़द्रें स्थापित करने की कोशिश करनी चाहिए। यह तब ही हो सकता है जब हम एक दूसरे की भावनाओं का भी ख्यान रखें। एक दूसरे की सेवा करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को यह नसीहत की है कि कई लोग ऐसे हैं कि जिनकी नमाज़ें उनके लिए हलाकत का कारण बन जाएँगी, उनकी तबाही का कारण बन जाएँगी। आगे उसका विस्तार फ़रमाया कि क्यों हलाकत का कारण बनेंगी? क्योंकि ऐसे नमाज़ी अनोथों और दरिद्रों का ध्यान नहीं रखते, समाज का अमन बर्बाद करने की कोशिश करते हैं। जब ऐसी हरकतें करोगे , इन्सानी क़दरों को स्थापित करने की कोशिश नहीं करोगे तो फिर अल्लाह के हुज़ूर इबादत व्यर्थ है और अल्लाह तआला ऐसी इबादतें स्वीकार नहीं करता। तो यह इस्लाम की बुनियादी शिक्षा है कि इबादत करो, नमाज़ें पढ़ो, पाँच वक़्त आओ लेकिन इसके साथ इन्सानियत की सेवा भी करो, इन्सानी क़द्रें भी स्थापित करो। अत: यह है वह चीज़ जिसे जमाअत अहमद यह दुनिया में स्थापित करने की कोशिश कर रही है और मुझे उम्मीद है कि इस मस्जिद के बनने के बाद यहां अहमदी पहले से भी बढ़कर सेवा के कामों में हिस्सा लेंगे। अब इस मस्जिद बनने के बाद हम इन्सानियत की और अधिक सेवा करने वाले होंगे और इन्सानी क़दरों को स्थापित करने वाले होंगे। एक दूसरे के साथ उत्तम व्यवहार करने वाले होंगे। बर्दाश्त का माद्दा भी हम में पहले से अधिक होगा और एक दूसरे के धर्म की इज़्ज़त तथा सम्मान भी करने वाले होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: अल्लाह करे कि यह मस्जिद अब यहां वास्तविक तौर पर वास्तविक इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने वाली हो और आप लोग देखें कि अहमदी पहले से बढ़कर इस देश के, इस शहर के लोगों की सेवा करने वाले हैं और इन्सानी क़दरों को स्थापित करने वाले हैं और अमन एवं सलामती के लिए हर संभव कोशिश करने वाले हैं। मैं दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला उन्हें यह तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। शुक्रिया

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ का यह ख़िताब 6 बजकर 45 मिन्ट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इसके बाद मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ की साथ खाना खाया।

खाने के बाद कई मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरिहलि अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया और तस्वीरें भी बनवाईं। इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार यहां से वापस बैयतुस्सबूह के लिए रवानगी हुई। पुलिस ने शहर से गुज़रते हुए मोटरवे तक क़ाफ़िला को Escort किया।

7 बजकर 40 मिनट पर यहां से रवाना हो कर 8 बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर की बैयतुस्सुबूह तशरीफ़ आवरी हुई। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

☆ ☆ ☆ ☆

..... पृष्ठ 1 का शेष

यदि हरवक़त एक जैसी हालत रहे तो इन्सान मर जाए। वास्तव में क़बज़ और बस्त के भी विभिन्न दर्जात होते हैं। कामिल मोमिन की जो हालत क़ब्ज़ होती है वह इससे निचले दर्जे वाले के लिए बस्त की हालत होती है। इसी तरह अंबिया पर भी क़बज़ तथा बस्त का समय आता रहता है परन्तु नबियों की क़बज़ सिद्दीक़ों की बस्त होती है। इसी लिए सूफिया ने कहा है कि حَسَنَاتُ الْاَبْرَارِ سَيِّئَاتُ الْمُقَرَّبِيْنَ। अर्थात नेक लोगों की नेकियां भी मुक़र्रबीन की बुराइयां होती हैं। इस का यही अर्थ है कि औसत दर्जा के लोग जिसको नेकी समझते हैं वह उच्च दर्जा के लोगों के निकट कई बार बुराई बन जाती है और औसत दर्जा के लोगों की बुराइयां नीचे दर्जा के लोगों की नेकियां होती हैं। अत: चूँकि ये दो हालतें इन्सान पर आती रहती हैं ओर मौत का समय किसी को मालूम नहीं। इस लिए फ़रमाया कि तुम ख़ुदा तआला से ऐसा सम्बन्ध बढ़ाओ कि तुम पर मौत ऐसे वक़्त में आए जो तुम्हारा बेहतरीन वक़्त हो और मौत का फिरश्ता तुम्हारी उस वक़्त जान निकाले जब तुम्हारा ख़ुदा तआला से एक सच्चा और मुख़लिसाना सम्बन्ध क़ायम हो चुका हो। "

(तफ़सीर कबीर, बाग 2 पृष्ठ 202 से 203 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad